

वार्षिक आख्या सत्र : 2020 – 21

केंद्रीय सांस्कृतिक समिति इलाहाबाद विश्वविद्यालय

एक भारत श्रेष्ठ भारत

- 1- मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देश और माननीय कुलपति महोदया की प्रेरणा से 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' अभियान इलाहाबाद विश्वविद्यालय में जनवरी माह में आरंभ हुआ। इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने इस कार्यक्रम के लिए प्रो. संतोष भदौरिया (प्रो. हिंदी विभाग) एवं प्रो. अजय जैतली (अध्यक्ष- दृश्य कला विभाग) को संयुक्त रूप से नोडल अधिकारी नियुक्त किया है। यह कार्यक्रम भारत की विविधता में एकता दर्शाने वाला एक अनूठा कार्यक्रम है। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत एकता दिवस 2021 के अवसर पर परिचर्चा, गीत प्रस्तुति, स्लोगन लेखन, स्वरिचत कविता पाठ, विशिष्ट व्याख्यान, पोस्टर निर्माण शपथ गृहण कार्यक्रम आदि के आयोजन अंतर विश्वविद्यालय स्तर पर किए गए।

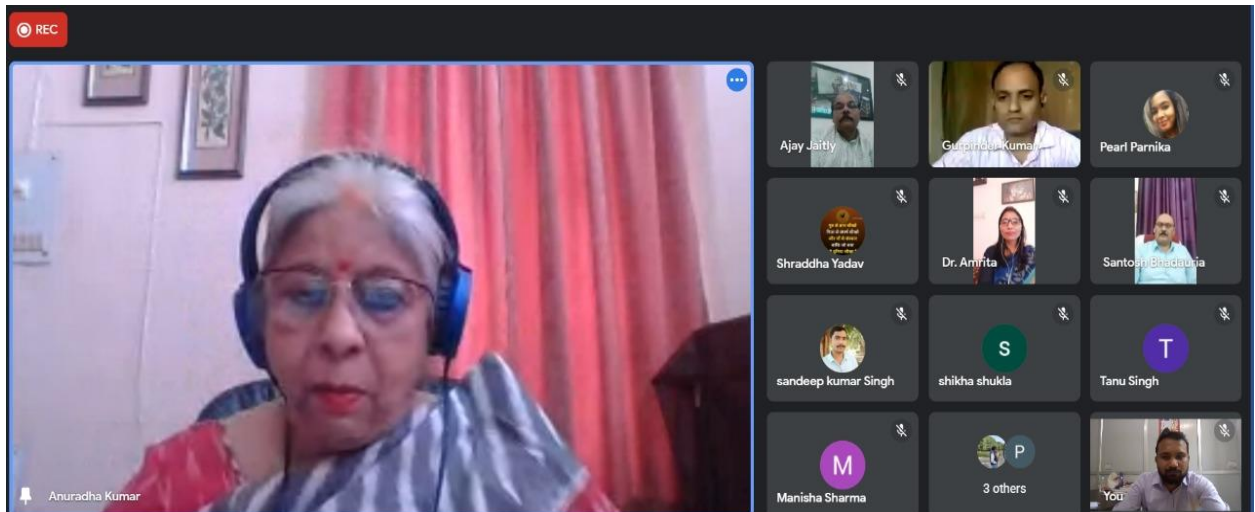
2- वेब संगोष्ठी :

एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत इलाहाबाद विश्वविद्यालय में 'राष्ट्रीय एकता एकता दिवस 2021' के अवसर पर आयोजित पांच दिवसीय कार्यक्रमों का आरंभ 'राष्ट्रीय एकता में स्त्रियों का योगदान' विषय पर आयोजित परिचर्चा के साथ हुआ। कार्यक्रम ऑनलाइन मोड से स्त्री अध्ययन केन्द्र के सहयोग से किया गया। केन्द्र के छात्र प्रशांत पाण्डेय एवं छात्रा तरू पर्णिका श्रीनेत ने परिचर्चा में अपनी विचारों को रखा। डा० अमृता, असिं. प्रोफेसर हिंदी विभाग ने वेदों को रेखांकित करते हुए, बिन्दुवार राष्ट्र निर्माण में महिला की उपस्थिति के बारे में बात की। उन्होंने खेल और लोकगीतों में महिला एकीकरण को समझाया। कार्यक्रम के आरंभ में प्रो० संतोष भदौरिया, नोडल अधिकारी ने कार्यक्रम की अध्यक्ष एवं वक्ता का स्वागत करते हुए एक भारत श्रेष्ठ भारत की रूपरेखा से परिचित कराया और पांच दिवसीय कार्यक्रमों की थीम से अवगत कराया। अपने वक्तव्य में कहा कि भारत में राष्ट्र, राष्ट्रवाद और राष्ट्रीकरण में महिलाओं के सराहनीय योगदान रहा है तथा वर्तमान परिदृश्य में राष्ट्रीय एकता में महिलाओं की भागीदारी सर्वविदित है।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो० अनुराधा कुमार, निदेशक, महिला अध्ययन केन्द्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने मौलिक अधिकारों के संदर्भ में राष्ट्रीय एकता को समझाया। सावित्री बाई फूले के स्त्री शिक्षा में योगदान को रेखांकित करते हुए सरोजिनी नायडू, सुचेता किरपलानी, अरुणा आसिफ अली द्वारा राष्ट्रीय एकता में योगदान को सराहा। उन्होंने भारत में महिलाओं के उत्थान के लिए समाज सुधारकों के योगदान पर भी प्रकाश डाला। प्रो० अजय जैतली नोडल अधिकारी ने कहा कि राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर पांच दिवसीय कार्यक्रमों को इस प्रकार बनाया गया है कि इसमें सभी रंग आपको देखने को मिलेंगे। कविता लेखन भी है तो स्लोगन लेखन भी, कला भी है तो परिचर्चा भी।

बताते चलें कि शिक्षा मंत्रालय के निर्देश एवं माननीय कुलपति महोदया की प्रेरणा से इलाहाबाद विश्वविद्यालय में एक भारत श्रेष्ठ भारत अभियान के लिए प्रो० संतोष भदौरिया एवं प्रो० अजय जैतली को नोडल अधिकारी बनाया गया है। इस बार राष्ट्रीय एकता दिवस (31 अक्टूबर) के अवसर पर पांच दिवसीय

कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रमों का समापन 31 अक्टूबर को शपथ कार्यक्रम के बाद किया जाएगा। कार्यक्रम का संचालन श्री गुरपिन्दर कुमार, सहायक प्रोफेसर, महिला अध्ययन केंद्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने किया व तकनीकी प्रबंधन श्री हरिओम कुमार, अनुवाद अधिकारी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय का रहा। इस कार्यक्रम में इविवि एवं संघटक कालेजों के छात्र/छात्राएं ने प्रतिभाग किया।



एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रमके अंतर्गत दिनांक 29.10. 2021 को इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अनेकता में एकता विषय पर पोस्टर निर्माण कार्यक्रम का आयोजन छात्र/छात्राओं के लिए किया गया। आज के कार्यक्रम के अंतर्गत विषय पर अपनी बात रखते हुए प्रो. संतोष भदौरिया (प्रोफेसर- हिंदी एवं नोडल अधिकारी- ने एक भारत श्रेष्ठ भारत के संकल्प को पूरा करने में एकता की ताकत को अहम बताया। प्रो. अजय जैतली (प्रो. दृश्य कला विभाग एवं नोडल अधिकारी - ने छात्र/छात्राओं द्वारा बनाए गए पोस्टरों की समीक्षा की। कला के आधार पर विषय को दर्शाने की बात कही। वहीं डा० अमृता (असि. प्रोफेसर-हिंदी) ने कहा कि हमें अपने जीवन में सभी को एक समान देखना चाहिए तभी हम एक भारत श्रेष्ठ भारत की कल्पना को पूरा कर सकते हैं। कार्यक्रम के आरंभ में हरिओम कुमार, हिंदी अनुवादक ने एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रमों की जानकारी देने के साथ कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर मैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय एवं संघटक कालेजों के छात्र /छात्राएं उपस्थित रहे।



3- विशेष व्याख्यान

भूमि, जन और संस्कृति से राष्ट्र बनता है।- प्रो० हनुमान प्रसाद शुक्ल

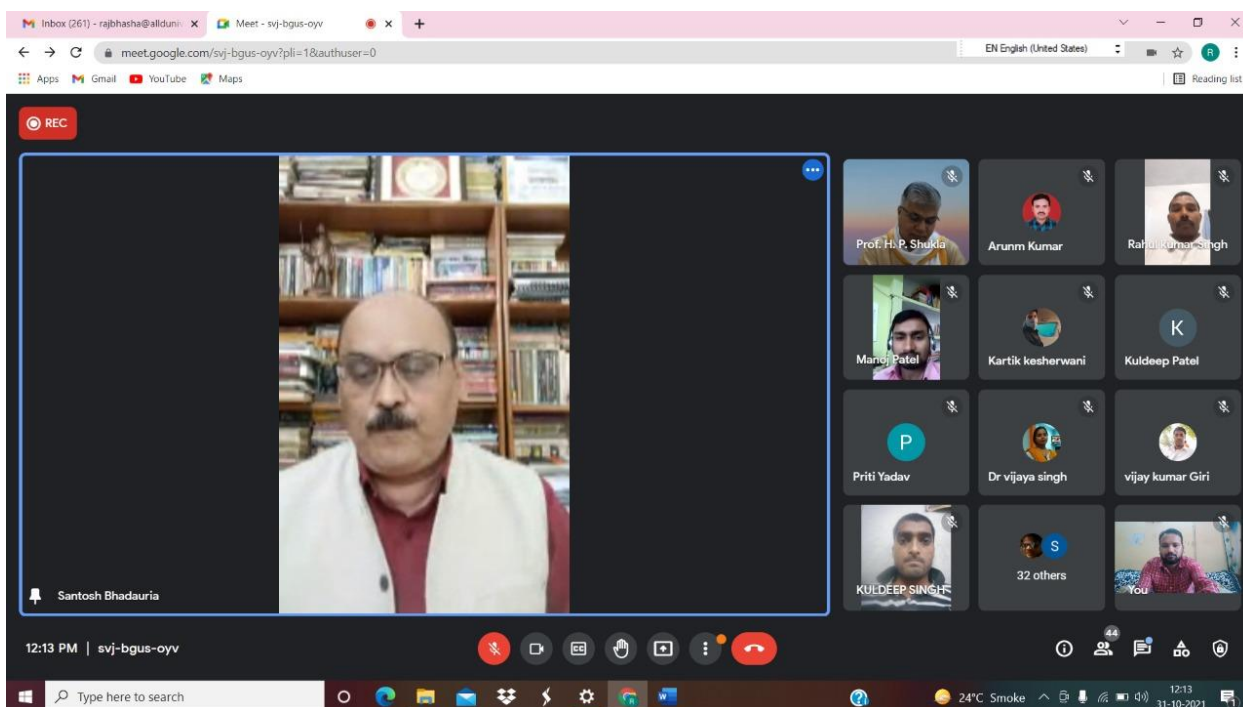
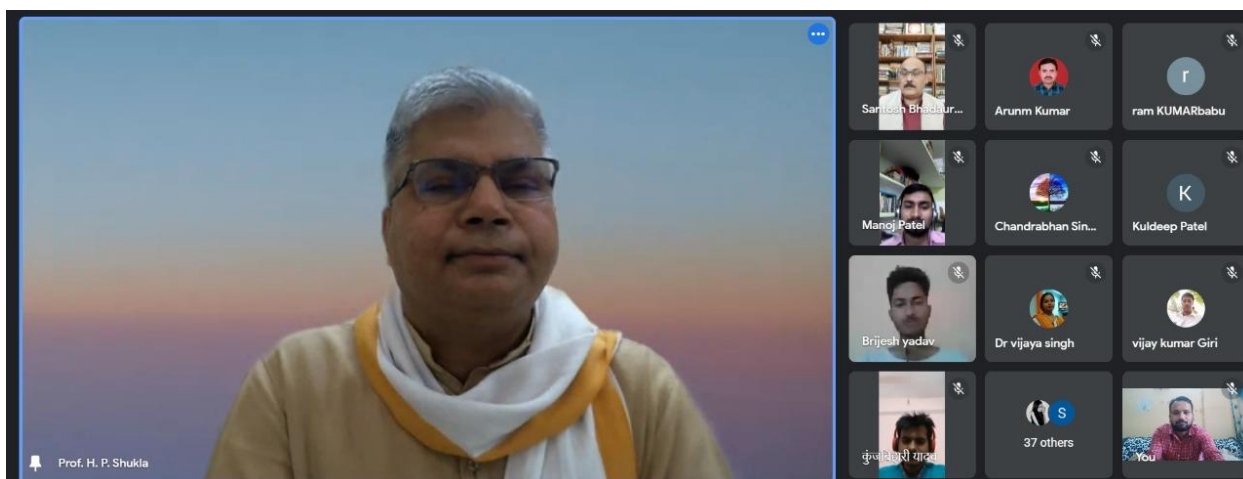
'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत इलाहाबाद विश्वविद्यालय में 'राष्ट्रीय एकता दिवस 2021' के अवसर पर आयोजित पांच दिवसीय कार्यक्रमों के क्रम में दिनांक 31.10.2021 को 'राष्ट्रीय भावात्मक एकता और हिंदी' विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। वक्ता के रूप में प्रो० हनुमान प्रसाद शुक्ल, सम कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा रहे। उन्होंने कहा कि आज के विषय का कैनवास काफी बड़ा है। राष्ट्रीय एकता दिवस पर राष्ट्र को समझना आवश्यक है, हमें ये जानना आवश्यक है कि राष्ट्र क्या है। राष्ट्र में तीन तत्व होते हैं भूमि, जन और उनकी कमाई गई संस्कृति। भूमि, जन और संस्कृति से ही राष्ट्र बनता है। हिंदी भाषा राष्ट्र को एकता में पिरोने का काम करती है। सिर्फ आठवीं अनुसूची की भाषाएं ही नहीं बल्कि हिंद की सभी भाषाएं मिलकर हिंदी का निर्माण करती हैं। हिंदी वह है जो हिंद की है। समय और स्थान के आधार पर बस नाम बदलते रहे हैं। आगे उन्होंने हिंदी के भाषा के इतिहास के संदर्भ में अपनी बात रखी और बताया कि आज की हिंदी हमारे समय की अनेक जनपदीय बोलियों से बनी है।

उन्होंने राजभाषा अनुच्छेद 1951 की जानकारी देते हुए उसके निर्माण में आने वाली समस्याओं से परिचित कराया। कहा कि जब तक शब्द अपनी भाषाओं में मिले तभी नए शब्द सृजन करने चाहिए नहीं तो शब्द अपनी भाषाओं में ही खोजे जाने चाहिए। भाषा और राष्ट्रीय एकता को आपने रूपक के माध्यम से भी समझाया कहा कि 'लोक भाषा का जो संबंध राष्ट्र भाषा से होता वहीं संबंध वट वृक्ष का लताओं से होता है।'

सरदार वल्लभ भाई पटेल के आजादी के आंदोलन में उनके योगदान को याद करते हुए उनके विचारों से विद्यार्थियों को परिचित कराया। उन्होंने कहा कि भारत की यही तो ताकत है कि हम विभिन्न समुदाय, भाषा, विचार के होने के बावजूद एक हैं। विविधता हमारी ताकत है। भारत एक बहुभाषी एवं बहुसांस्कृतिक राष्ट्र है जिसमें अनेक धर्म, संस्कृतियों, परम्पराओं को मानने वाले लोग रहते हैं। हिंदी भाषा राष्ट्र को जोड़ने और एकता का कार्य करती है। हिंदी और लोक भाषाएं भारत की एकता की मजबूत कड़ी हैं।

इससे पूर्व 11 बजे राष्ट्रीय एकता की शपथ जूम एप के माध्यम से ली गई जिसमें इलाहाबाद विश्वविद्यालय के शिक्षक और अधिकारी एवं कर्मचारी शामिल हुए।

बताते चलें कि शिक्षा मंत्रालय के निर्देश एवं माननीय कुलपति महोदया की प्रेरणा से इलाहाबाद विश्वविद्यालय में 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' अभियान के लिए प्रो० संतोष भदौरिया एवं प्रो० अजय जैतली को नोडल अधिकारी बनाया गया है। इस बार राष्ट्रीय एकता दिवस (31 अक्टूबर) के अवसर पर पांच दिवसीय कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। शपथ कार्यक्रम और विशेष व्याख्यान के साथ पांच दिवसीय कार्यक्रम समाप्त हुए। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन अनुवाद अधिकारी हरिओम कुमार ने किया। आज के कार्यक्रम में इविवि एवं संघटक कालेजों के लगभग 100 छात्र/छात्राएं ने ऑनलाइन और ऑफलाइन प्रतिभाग किया।



वार्षिक आख्या सत्र : 2020 – 21

केंद्रीय सांस्कृतिक समिति इलाहाबाद विश्वविद्यालय

केंद्रीय सांस्कृतिक समिति इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी परिसर में विभिन्न साहित्यिक , सांस्कृतिक एवम् शैक्षणिक कार्यक्रम आयोजित किए।

विशेष व्याख्यान (12 जनवरी 2021)

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की केंद्रीय सांस्कृतिक समिति द्वारा 158 वीं विवेकानंद जयंती का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 'शिक्षा और मनुष्य की क्षमताओं का पूर्ण विकास' विषय पर प्रोफेसर मानस मुकुंद दास ने एकल व्याख्यान दिया।

विषय की प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए सांस्कृतिक समिति के सचिव डॉक्टर चितरंजन कुमार ने कहा कि विवेकानंद अक्षय ऊर्जा के स्रोत हैं। विवेकानंद की जीवन यात्रा एक मध्यमवर्गीय युवक की ऐसी यात्रा है जिससे हर कोई प्रेरणा ले सकता है। विषय पर बोलते हुए प्रख्यात शिक्षाविद प्रोफेसर मानस मुकुल दास ने कहा कि विवेकानंद ने सदैव 'मैन मेकिंग एजुकेशन' पर जोर दिया। विवेकानंद इस बात पर विचार करते थे कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व निर्माण होना चाहिए। हमारी आज की शिक्षा छात्र को इंजीनियर, डॉक्टर तो बनाती है पर उसे मनुष्य नहीं बनाती। उन्होंने उदाहरण द्वारा सिद्ध किया कि भारत की दृष्टि विश्वदृष्टि है। ऐसे दौर में जब ब्रिटिश साम्राज्यवाद वैचारिक रूप से भारत को तोड़ रहा था तब विवेकानंद ने पूरी दुनिया में भारत के उदार जीवन दृष्टि से लोगों का परिचय कराया।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए इलाहाबाद विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर संगीता श्रीवास्तव ने कहा कि शिक्षा हमें सर्जनात्मक बनाती है। किताब के पांच प्रश्नों को लिख कर इम्तिहान पास कर लेना शिक्षा का उद्देश्य नहीं है। कुलपति ने इस बात पर जोर दिया कि विश्वविद्यालयों को रचनात्मकता के केंद्र में परिवर्तित करने की जरूरत है। कुलपति प्रो संगीता श्रीवास्तव ने कहा कि शिक्षा का मूल उद्देश्यतत्त्वों का संकलन करना नहीं बल्कि मन को एकाग्र करना है। उन्होंने देश की नई पीढ़ी के लिए अपने विचार भी साझा किए।

डॉ विनम्र सेन ने कार्यक्रम का संचालन किया और डॉ अमृता ने धन्यवाद दिया। कार्यक्रम के दौरान प्रोफेसर हर्ष कुमार, प्रो जया कपूर, प्रो सर्वजीत मुखर्जी, प्रो रामेंद्र सिंह, प्रो सिद्धी, डॉ शेफाली नंदन डॉ कुमार वीरेंद्र आदि उपस्थित रहे।





गणतंत्र दिवस

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन पारंपरिक उत्साह और उल्लास के साथ किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत कुलपति महोदय प्रो संगीता श्रीवास्तव ने ध्वजारोहण के साथ किया। फिर उन्होंने एनसीसी कैडेट्स के गार्ड ऑफ ऑनर का निरीक्षण किया और एनएसएस के बच्चों का अभिवादन स्वीकार किया। अपने संबोधन में कुलपति महोदय ने कहा की स्वतंत्रता आंदोलन में इलाहाबाद विश्वविद्यालय और इलाहाबाद शहर का योगदान ऐतिहासिक है। उन्होंने शहीद लाल पदमधर जैसे विलक्षण युवा नेतृत्व को याद करते हुए कहा कि राष्ट्र निर्माण में और स्वतंत्रता के आंदोलन में उनका योगदान गर्व और श्रद्धा के साथ याद किया जाता है। उन्होंने कहा कि हमें एक साथ आने और आत्मनिरीक्षण करने की आवश्यकता है - न केवल शिक्षक और प्रशासक बल्कि छात्र और नागरिक जो बौद्धिक जीवन की आत्मा के रूप में विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाते हैं। कहा कि विश्वविद्यालय में सबसे ज्यादा बल शोध पर दिए जाने की जरूरत है ताकि। क्योंकि इन्हीं शोध के गर्भ से विकास की भागीरथी निकलेगी और समृद्ध भारत आत्मनिर्भर भारत और स्वस्थ भारत का हमारा सपना साकार होगा। उन्होंने कहा कि हमें अपने जीने के तरीके सामाजिक विन्यास और राष्ट्रीय संस्कार को फिर से कहना होगा और इस नव यज्ञ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय की भूमिका अग्रणी रहेगी। तत्पश्चात सीनेट हॉल में आयोजित समारोह में सर्वप्रथम संगीत विभाग द्वारा एक भजन का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा की जीवनी पर आधारित एक डॉक्यूमेंट्री भी दिखाई गई। सेनेट हॉल में अपने संबोधन में कुलपति ने कहा की विश्वविद्यालय का एक गौरवमयी इतिहास है और पिछले कुछ वर्षों में जो जो गरिमा खो गई है उसको वापस दिलाने के लिए वे कटिबद्ध है। लैरी कॉलिन्स और डोमिनिक लैपियरे ने अपनी पुस्तक फ्रीडम एट मिडनाइट में एक बिंदु पर कहा है जब भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त की थी और झंडा फहराया गया था तब स्वतंत्रता के आने का जश्न मनाने के लिए दिल्ली की सड़कों पर आधा मिलियन लोग थे। लेकिन उसी दिन लोगों ने इस दृष्टि से बसों के लिए टिकट नहीं खरीदे कि किराया औपनिवेशिक शासकों द्वारा लगाया गया था और अब स्वतंत्रता है इसलिए किराया अनावश्यक है। उसके बाद के तीन वर्षों में, जैसा कि हम एक गणतंत्र बन गए, हमने सीखा कि बड़ी स्वतंत्रता के साथ महान जिम्मेदारी आती है और स्वतंत्रता का आनंद लेने के लिए अनुशासन की आवश्यकता होती है। हमें एक शैक्षणिक संस्थान के रूप में अपना कर्तव्य निभाना होगा और अगर हम ऐसा करने में विफल होते हैं तो हम उच्चतम व्यवस्था के भ्रष्टाचार में लिप्त हो जाते हैं हमें अकादमिक जीवंतता को विश्वविद्यालय में वापस लाना होगा। उन्होंने कहा कि यह उत्साहवर्धक है कि अधिकांश शिक्षकों ने ऑनलाइन कक्षाएं विश्वविद्यालय में आ कर लेना शुरू कर दिया है पर कुछ शिक्षकों को अभी भी ऑनलाइन क्लास लेने में कुछ परेशानी हो रही है। उन परेशानियों को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है और जल्द ही संसाधनों को मुहैया कराया जाएगा ताकि कक्षाएं सुचारू रूप से ऑनलाइन विश्वविद्यालय से ही ली जा सके। उन्होंने कहा कि विश्व विद्यालय में शिक्षकों की उपस्थिति से विश्वविद्यालय की जीवंतता का एहसास होता है और शिक्षकों का क्लास ना लेना या अकादमिक कार्यों में भागीदारी ना करना एक प्रकार का भ्रष्टाचार है जिसको किसी भी अन्य भ्रष्टाचार की तरह ही बिल्कुल बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। अपने संबोधन में उन्होंने कहा यदि विश्वविद्यालय को उसकी खोयी गरिमा वापस दिलानी है तो कुछ कड़े कदम उठाने की जरूरत हो सकती है और इसके लिए आने वाले

समय में उनको सभी छात्रों शिक्षकों और विश्व विद्यालय परिवार के अन्य सदस्यों का, विश्वास, समर्थन और सहयोग चाहिए होगा। कुलसचिव प्रो एन के शुक्ला ने संक्षिप्त नोटिस पर कुलपति द्वारा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्यामजी कृष्ण वर्मा की डॉक्यूमेंट्री दिखाए जाने की स्वीकृति देने पर उनको धन्यवाद देते हुए कहा कि श्यामजी कृष्ण वर्मा का जीवन छात्रों को प्रेरित करेगा और उनको बताएगा कि कुछ जाने-माने नामों के पीछे हजारों कम जाने पहचाने या अनजान चेहरे थे जिन्होंने स्वतंत्रता के आंदोलन में अपना सारा जीवन और सर्वस्व त्याग दिया। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने प्रण किया था कि वह हिंदुस्तान वापस तभी आएंगे जब वह स्वतंत्र हो जाएगा और स्वतंत्रता से पूर्व भी उनकी मृत्यु हो गई। उनकी अस्थियों को गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री और अभी हमारे प्रधानमंत्री प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी हिंदुस्तान लेकर आए और कच्छ में उनके स्मारक का निर्माण करवाया। श्यामजी कृष्ण जैसे स्वतंत्रता सेनानियों का जीवन छात्रों को स्वतंत्रता लोकतंत्र और गणतांत्रिक मूल्यों को समझने और संजोकर रखने की प्रेरणा देगा। उन्होंने और अन्य सभी संबंधित व्यक्तियों को कार्यक्रम को सुचारू रूप से संपन्न कराने का धन्यवाद ज्ञापन भी प्रेषित किया कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर जया कपूर ने किया

चौरी चौरा शताब्दी महोत्सव

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में आज से चौरी चौरा के शताब्दी वर्ष मनाने का समारोह शुरू हुआ। इस अवसर पर नगर प्रशासन के शिक्षकों, प्रशासनिक अधिकारियों, छात्रों और अधिकारियों ने शहीद लाल पद्मधर के स्मारक पर पुष्प श्रधांजलि अर्पित की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय व अन्य विद्यालयों के छात्रों ने वंदे मातरम् के उत्साहवर्धक आह्वान पर प्रभातफेरी निकाली। 4 फरवरी को चौरी चौरा शताब्दी महोत्सव पर उत्तर प्रदेश संस्कृति विभाग द्वारा जारी निर्देश के आलोक में गिनीज बुक्स ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के लिए इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दर्जनों छात्र छात्राओं द्वारा आज वंदे मातरम् का गायन किया गया। ये सारे वीडियो उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा दिए गए लिंक पर अपलोड किए जाएंगे। चेयरपर्सन प्रोफेसर सर्वजीत मुखर्जी, डॉ ज्योति, डॉ चितरंजन और उनकी टीम को बधाई।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस (8 -12 मार्च 21)

केंद्रीय सांस्कृतिक समिति इलाहाबाद विश्वविद्यालय की ओर से 8 -12 मार्च 21 तक आयोजित अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस समारोह के पांचवें और अंतिम दिन ऑनलाइन समापन व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमें वक्ता के रूप में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की प्रो. गरिमा श्रीवास्तव ने 'स्त्री आत्मकथाएं: भारतीय परिप्रेक्ष्य' विषय पर अपनी बातें विस्तार से साझा की। ऑनलाइन समापन व्याख्यान में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग केशोधार्थी व अध्यापकों के साथ ही देश के सुदूर क्षेत्रों- दिल्ली व सिक्किम से भी शोधार्थी व अध्यापक जुड़े। व्याख्यान की शुरुआत में प्रो. संतोष भदौरिया ने प्रो. गरिमा श्रीवास्तव की पुस्तकों 'देह ही देश' व 'जखम, फूल और नमक' के माध्यम से प्रो. गरिमा श्रीवास्तव की साहित्यिक अभिरुचि का परिचय दिया। प्रो. गरिमा श्रीवास्तव ने विश्व भर की विभिन्न भाषाओं में लिखी गई 700 से भी अधिक आत्मकथाओं का अध्ययन करने के बाद जो समझ विकसित की उसके आधार पर बात करते हुए अपने व्याख्यान की शुरुआत पुरुष आत्मकथा व स्त्री आत्मकथा के

मुख्य अंतर से की। उनका मानना है कि पुरुष व स्त्री के आत्मकथा लेखन में मुख्य अंतर अहम भाव का है। पुरुष अपने अहम के चलते कुछ महत्वपूर्ण बातों पर पर्दा डाल देता है। जिससे आत्मकथा की प्रमाणिकता प्रभावित होती है जबकि स्त्री आत्मकथा अहमन्यूनता के चलते कहीं अधिक प्रामाणिक होती है।

प्रो. गरिमा श्रीवास्तव ने आत्मकथा के बारे में जान स्टुअर्ट मिल व मिशेल फूको के विचार भी साझा किए। भारतीय परिपेक्ष में बात करते हुए उन्होंने मैनेजर पांडेय व निर्मला जैन के आत्मकथा संबंधी विचार भी रखे। उनका मानना है कि स्त्रियां आत्मकथाएं तभी लिख सकती हैं जब उनमें अपने से आंख मिलाने का साहस हो। प्रो. गरिमा श्रीवास्तव ने तमिल लेखिका नलिनी जमीला, बांग्ला लेखिका सरला देवी चौधरानी, मराठी लेखिका कुमुद पावडे, मराठी लेखिका उर्मिला पवार, हरियाणवी लेखिका कौशल पवार तथा सुशीला राय व सुमित्रा मेहरौल की आत्मकथा पर विस्तार से चर्चा की।

व्याख्यान के अंत में शोध छात्र-छात्राओं शिवनारायण, मधुकर, सत्यप्रकाश, सोनम, मंजू, अनामिका व विकास ने अपने प्रश्न व जिज्ञासाएं प्रो. गरिमा श्रीवास्तव से साझा कीं। प्रश्नों के उत्तर के दौरान प्रो. गरिमा जी ने कहा 'आत्म से संवाद के बिना आत्मकथा संभव नहीं'। व्याख्यान के अंत में प्रो. संतोष भदौरिया ने प्रो. गरिमा श्रीवास्तव को धन्यवाद ज्ञापन के क्रम में कहा-'आज का वक्तव्य ज्ञान की परिधि का विस्तार करने वाला था।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाने के लिए एक सप्ताह लंबे कार्यक्रम के तहत वाणिज्य और व्यापार प्रशासन विभाग के सहयोग से केंद्रीय सांस्कृतिक समिति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा "स्त्री: संघर्ष और मुक्ति" विषय पर एक पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रोफेसर ए के मुखर्जी, डीन, वाणिज्य संकाय द्वारा किया गया था। प्रो. ए के मालवीय, वाणिज्य और व्यापार प्रशासन विभाग के प्रमुख, प्रो संतोष भदौरिया, सांस्कृतिक समिति के अध्यक्ष, डॉ अमृता, डॉ चितरंज, और विभाग के अन्य संकाय सदस्य भी इस अवसर पर मौजूद थे। डॉ शेफाली नंदन कार्यक्रम समन्वयक थीं। पोस्टर में महिलाओं के संघर्ष के विभिन्न पहलुओं को दिखाया गया है।



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस(मुख्य कार्यक्रम)

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च 2021) का मुख्य आयोजन तिलक भवन हुआ। इस कार्यक्रम का शीर्षक था - संघर्ष और मुक्ति। इस अवसर पर मुख्य अतिथि सेवानिवृत्त माननीय न्यायमूर्ति विजयलक्ष्मी थीं। सम्मानित अतिथियों में प्रमुख आलोचक प्रोफेसर राजेंद्र कुमार और एसिड अटैक सर्वाइवर्स और कार्यकर्ता छांव फाउंडेशन से मिस डॉली और मिस रूपा शामिल थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय कुलपति प्रोफेसर संगीता श्रीवास्तव ने की। केंद्रीय सांस्कृतिक समिति के अध्यक्ष प्रो. संतोष भदौरिया ने अतिथियों का स्वागत किया और कहा कि विश्वविद्यालय में हो रहे बदलाव माननीय कुलपति प्रोफेसर संगीता श्रीवास्तव के प्रयासों का प्रतिबिंब हैं। विश्वविद्यालय के इतिहास में पहली महिला कुलपति हैं। प्रसिद्ध आलोचक प्रोफेसर राजेंद्र कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि महिला दिवस उस प्रयास का प्रतीक है जो समाज में महिलाओं को उचित सम्मान दिलाने के लिए किया जाना जाता है। उन्होंने कहा कि वह उस क्षण का साक्षी बनकर खुद को भाग्यशाली महसूस करते हैं जब इस संस्थान में इस दिन मंच सशक्तिकरण का एक जीवंत अनुस्मारक है, जिसमें अध्यक्ष, मुख्य अतिथि और विशेष वक्ता सभी सिर्फ महिलाएं नहीं हैं बल्कि सशक्त महिलाओं का उदाहरण हैं। उन्होंने कहा कि हमारी जैविक पहचान हमारे नियंत्रण से बाहर है लेकिन हमारी सामाजिक पहचान अक्सर हम पर थोपी जाती है। प्रकृति भेद करती है लेकिन भेदभाव नहीं करती। यह समाज ही है जो भेदभाव करता है। स्त्री अध्ययन केवल पश्चिमी चिंतन की देन नहीं है, बल्कि महादेवी वर्मा ने पश्चिम में स्त्री चिंतन का कोई भी बड़ा दस्तावेज़ आने से बहुत पहले ही शृंखला की कड़ियाँ लिखी थीं।

न्यायमूर्ति विजय लक्ष्मी ने अपने संबोधन में कहा कि इस वर्ष के अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का विषय "चुनौती चुनें" है और आज "संघर्ष और मुक्ति" नामक कार्यक्रम के सार को दर्शाता है। हमें चुनौतियों को बाधा नहीं बल्कि अवसर मानना चाहिए। उन्होंने कहा कि कानून की छात्रा के रूप में उनके अपने दिनों में उन्हें लड़कों से बात करने की इजाजत नहीं थी इसलिए उन्होंने अपना पूरा समय पढ़ाई में लगाया। वह टॉपर थी और उसे फ्रांस जाने का मौका दिया गया था लेकिन उसकी शादी तय हो गई थी और इसलिए उसे छात्रवृत्ति पर फ्रांस जाने की अनुमति नहीं दी गई। और शादी के बाद भी वह अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर सकीं क्योंकि घर की ज़िम्मेदारियों ने उन्हें बांधे रखा। महिलाओं के लिए करियर को घरेलू ज़िम्मेदारी के साथ संतुलित करना होगा। और आज महिलाएं इसे सिर्फ कर ही नहीं रही हैं बल्कि बखूबी कर रही हैं। इसलिए लड़कियों को शादी को बाधा के रूप में नहीं लेना चाहिए बल्कि अपनी पहचान के लिए प्रयास जारी रखना चाहिए।

:कुलपति प्रोफेसर संगीता श्रीवास्तव ने अध्यक्ष के रूप में अपने संबोधन में कहा कि उनके जीवन में उनके पिता ने उन्हें अपने व्यक्तित्व और करियर के निर्माण के लिए हर अवसर और स्वतंत्रता दी। उन्होंने हमेशा अपनी मां को पारिवारिक मामलों में निर्णय लेने की आजादी दी और उनकी बेटी के रूप में उनकी उपलब्धियां उनके पालन-पोषण की सफलता का प्रमाण हैं। उन्होंने यह भी कहा कि हमने कन्या भ्रूण हत्या करके लड़कियों से जीने का निर्णय लेने का अधिकार छीन लिया है और ऐसा करके हम न केवल एक लड़की का जीवन समाप्त कर रहे हैं बल्कि प्रजनन की शृंखला को

तोड़कर प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमें उन्हें जीने, बढ़ने और अपनी पहचान खोजने की आजादी देनी होगी। उन्होंने कहा कि हम डॉली और रूपा के साहस की प्रशंसा करते हैं और न्यायमूर्ति विजयलक्ष्मी के संघर्ष और जीत की प्रशंसा करते हैं। महिलाओं के पास शक्तियां हैं और वे सशक्त हैं क्योंकि प्रकृति ने उन पर जिम्मेदारी सौंपी है कि वे नया जीवन दे सकती हैं और उसका पालन-पोषण कर सकती हैं।

छाँव फाउंडेशन की स्टॉप एसिड अटैक्स टीम की सुश्री रूपा ने एक एसिड पीड़िता के रूप में अपनी कहानी के बारे में बताया और कहा कि वह अपनी दिशा खो चुकी थी लेकिन फाउंडेशन की मदद से उसने अपना आत्मविश्वास पाया और आज छाँव फाउंडेशन के माध्यम से वे उन तक पहुँच रहे हैं और बदलाव ला रहे हैं। सुश्री डॉली ने अपने सहज शब्दों से उपस्थित लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया और कहा कि एसिड अटैक से पीड़ित महिलाएं अपना आत्मविश्वास खो देती हैं और समाज से दूर हो जाती हैं, लेकिन यह सही नहीं है। उन्होंने कहा कि उन्होंने सीखा कि हमें मुस्कुराना होगा और फिर हम किसी भी चुनौती का सामना कर सकते हैं। उन्होंने कहा, मैं अब हमेशा मुस्कुराती हूँ और खुद को खूबसूरत महसूस करती हूँ।

महिलाओं के मुद्दे विषय पर एक प्रदर्शनी भी लगी। समारोह की सूत्रधार हिन्दी विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर अमृता थीं। प्रोफेसर शबनम हमीद ने बहुत धन्यवाद ज्ञापन दिया।







दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2021

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2021 की पूर्व संध्या पर दिनांक 20 जून 2021 को शाम 4:00 से 5:00 बजे तक केंद्रीय सांस्कृतिक समिति के तत्वावधान में योग: एक वैश्विक दृष्टि, विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया है। इस व्याख्यान के विशेष वक्ता गुरुकुल कांगड़ी सम विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं बागपत के संसद सत्यपाल सिंह थे।

आज इलाहाबाद विश्वविद्यालय में ऑनलाइन प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन सत्र के साथ अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। कुलपति प्रोफेसर संगीता श्रीवास्तव ने सत्र की अध्यक्षता की। अपने संदेश में उन्होंने जीवन में खुश और स्वस्थ रहने के लिए योग अपनाने पर जोर दिया। उन्होंने सभी के स्वास्थ्य, खुशी और कल्याण की कामना भी की। स्वराज्य विद्यापीठ से योगाचार्य श्री अखिलेश तिवारी जी द्वारा कार्यक्रम का संचालन किया गया। उन्होंने योग के दैनिक अभ्यास के लिए विभिन्न आसन बताए।





YOG



The practice of quieting your mind





वार्षिक आख्या सत्र : 2021 – 22

केंद्रीय सांस्कृतिक समिति इलाहाबाद विश्वविद्यालय

केंद्रीय सांस्कृतिक समिति इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी परिसर में विभिन्न साहित्यिक , सांस्कृतिक एवम् शैक्षणिक कार्यक्रम आयोजित किए।

विशेष व्याख्यान

20 जुलाई 2021 को अपराह्न 02 बजे केंद्रीय सांस्कृतिक समिति के तत्वावधान में व्यक्तित्व निर्माण में भाषा की भूमिका, विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया है। विशेष व्याख्यान प्रो. संजय सिंह बघेल ने दिया

एन.बी.टी.कार्यक्रम (28 जुलाई 2021)

दुनिया को देखने की जो नजर बचपन में बनती है वह ताउम्र हमारे साथ रहती है. पहले यह नज़र हमें अपने बुजुर्गों की अनुभव पकी कहानियों के जरिये मिलती थी। अब यह काम पुस्तकें कर रही हैं. बच्चों के जीवन को जानना और समझना फिर उनके लिए कुछ रचनात्मक लिखना बहुत जिम्मेदारी का काम होता है. अनुवाद अपने आप में एक जटिल प्रक्रिया है फिर बाल साहित्य का अनुवाद तो और भी तैयारी की मांग करता है. यह बातें इलाहाबाद विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. संगीता श्रीवास्तव ने नार्थ हाल में केंद्रीय सांस्कृतिक समितिके तत्वावधान में आयोजित पुस्तक लोकार्पण एवं प्रमाणपत्र वितरण समारोह में बतौर अध्यक्ष कहीं।

कुलपति ने भारतीय ज्ञान परंपरा और अनुवाद की जरूरत पर बल दिया। उन्होंने कठोपनिषद के नचिकेता यम संवाद के माध्यम से प्रश्नाकुल बाल मन पर भी विस्तार से प्रकाश डाला। कुलपति ने कहा कि दादी नानी की भूमिका सिर्फ बच्चों को कहानी सुनाने तक सीमित नहीं थी बल्कि इससे दुनियाभर का अनुभव भी सहजता से बच्चों को मिल जाता था। कुलपति ने पुस्तक पढ़ने की जरूरत पर अपने अनुभव भी साझा किए।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रो. पंकज कुमार ने पुस्तक संस्कृति को विस्तार देने में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की भूमिका की चर्चा की। साथ ही विश्वविद्यालय के साथ मिलकर भविष्य की कार्य योजनाओं के प्रस्ताव भी रखा. राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अधिकारी और पुस्तक संस्कृति पत्रिका के संपादक का संदेश शोधार्थी धीरेन्द्र सिंह ने पढ़ा. जिसमें उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय के राजभाषा अनुभाग और सेंटर आफ़ मीडिया स्टडीज के सहयोग से हुयी अनुवाद की इस कार्यशाला की सफलता के प्रति आभार व्यक्त किया. हिंदी विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. मीणा कुमारी ने लेखिका मोपिया बासु का संदेश पढ़ा और अनुवाद की कार्यशाला के अपने अनुभव साझा किये. केंद्रीय सांस्कृतिक समिति के अध्यक्ष प्रो. संतोष भदौरिया ने पूरी कार्यशाला की रूपरेखा और पुस्तकों के सफल अनुवाद की पूरी प्रक्रिया को विस्तार से सबके सामने रखा. उन्होंने अनुवादकों और इस कार्यशाला से जुड़े लोगों के प्रति भी आभार जताया जिनके चलते 30 पुस्तकें हिंदी भाषा की दुनिया का हिस्सा बन सकीं.

आज के आयोजन में एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम और राजभाषा अनुभाग की विविध प्रतियोगिताओं के लिए भी प्रमाण-पत्र वितरित किये गये. सत्य प्रकाश शुक्ला, वैभव त्रिपाठी, हर्षिता त्रिपाठी, अवंतिका सिंह, अभिषेक पांडेय, प्रगति सिंह, भीम सिंह बृहस्पति मणि त्रिपाठी, समेत कई छात्रों को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की पी.आर.ओ. प्रोजया कपूर, सांस्कृतिक समिति के सचिव डॉ. चितरंजन कुमार और संयुक्त कुलसचिव ए.के. कनौजिया, अध्यक्ष विज्ञान संकाय प्रो.शेखर श्रीवास्तव, प्रो.अजय जेटली, सेंटर आफ़ मीडिया स्टडीज के प्रो.धनञ्जय चोपड़ा, प्रो.आई.आर.सिद्दीकी हिंदी विभाग के प्रो.योगेन्द्रप्रतापसिंह, डॉ.दीनानाथमौर्य, डॉ.जनार्दन, डॉ.अमृता, डॉ.विम्र सेन सिंह, राजभाषा अनुभाग के अधिकारी हरिओम के साथ-साथ अनुवादक और प्रतिभागी भी उपस्थित रहे. धन्यवाद ज्ञापन प्रो सिद्दीकी ने किया और कार्यक्रम का संचालन डॉ.शेफाली ने किया..



विशेष व्याख्यान

दिनांक 01 अगस्त 2021 को अपराह्न 02 बजे केंद्रीय सांस्कृतिक समिति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के तत्वावधान में 'रहिमन पानी राखिये' विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता जलपुरुष राजेन्द्र सिंह थे।

स्वाधीनता दिवस

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की केंद्रीय सांस्कृतिक समिति ने "आजादी का अमृत महोत्सव" के तहत लोरी लेखन, देशभक्ति गीत लेखन और रंगोली प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। तीनों प्रतियोगिताओं में करीब 250 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। सीनेट हॉल परिसर के गलियारे में चालीस समूहों ने जब रंगों की विभिन्न छटाओं में

आजादी की घटनाओं को उकेरा तो वह 75 वर्ष पूर्व का इतिहास जीवंत हो उठा। रंग भले ही भिन्न भिन्न थे लेकिन उनकी सामूहिकता ने अनेकता में एकता को स्थापित किया तो उस समय परिसर में उपस्थित शिक्षकों और छात्रों का दर्शकों के रूप में कारवां बनता चला गया।

रंगोली प्रतियोगिता के निर्णायक के रूप में डॉ. प्रिया केसरी एवं डॉ. ऋतु सुरेका ने सभी रंगोलियों का अवलोकन किया। जबकि देशभक्ति गीत लेखन प्रतियोगिता एवं लोरी लेखन प्रतियोगिता में थाई लगभग 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं में लिखे गए देशभक्ति गीत एवं लोरियों का मूल्यांकन दो सदस्यीय निर्णायक मंडल ने किया। इसमें डॉ. विनम्र सेन सिंह एवं डॉ. सुजीत सिंह ने योगदान दिया। सभी प्रतियोगिताओं के निर्णय आगामी कार्यक्रम में शीघ्र ही घोषित किए जाएंगे।

विभिन्न प्रतियोगिताओं के अवलोकनार्थ विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. एन. के. शुक्ला, छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. के. पी. सिंह, अधिष्ठाता कला संकाय प्रो. हेरंब चतुर्वेदी, विश्वविद्यालय की पी. आर. ओ. प्रो. जया कपूर, हिंदी विभाग के प्रो. संतोष भदौरिया, राजभाषा अनुवाद अधिकारी श्री हरिओम, विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक समिति के अध्यक्ष प्रो. अजय जेतली एवं सांस्कृतिक समिति के सदस्य डॉ. अमृता, डॉ. फरीदा अहमद, डॉ. प्रिया केसरी, डॉ. वीरेंद्र कुमार मीणा, डॉ. विशाल जैन आदि उपस्थित रहे।

इस दौरान विश्वविद्यालय कैम्पस में उत्सव का माहौल रहा और छात्र छात्राओं की उत्सवधार्मिता देखते ही बन रही थी। दृश्य कला विभाग के शिक्षक और शोधार्थियों का पूर्ण सहयोग रहा।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रांगण में हर्षोल्लास के साथ 75 वां स्वाधीनता दिवस समारोह मनाया गया। कुलपति प्रो. संगीता श्रीवास्तव ने सुबह 10:00 बजे विश्वविद्यालय परिसर में झंडोत्तोलन किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षक, प्रशासनिक अधिकारी, गैर शैक्षणिक कर्मचारी तथा छात्र छात्राएं उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान कोविड-19 के नियमों का पालन किया गया।

कुलपति प्रो. संगीता श्रीवास्तव ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में आजादी के लिए प्राणों की आहुति देने वाले शहीदों को याद किया तथा कहा कि राष्ट्र निर्माण हम सबकी नैतिक जिम्मेदारी है। कुलपति ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षकों और छात्रों को कोरोना वायरस से बचने के लिए इंजेक्शन के दोनों डोज लेने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि हम शिक्षक एवं छात्र प्रबुद्ध वर्ग, आने वाले राष्ट्र की इमारत की नींव की ईंट हैं। इसी नींव की ईंट के ऊपर आने वाले कल की इमारत खड़ी होगी। हमको इसको मजबूत बनाना है ताकि आने वाले कल की वह भव्य इमारत मजबूती से खड़ी हो सके। इस दौरान कुलपति ने जयशंकर प्रसाद की कविता भी पढ़ी :-

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से,

प्रबुद्ध शुद्ध भारती।

स्वयंप्रभा समुज्ज्वला,

स्वतंत्रता पुकारती॥

अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञा सोच लो।

प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो बढ़े चलो॥

इस अवसर पर संगीत विभाग द्वारा देश भक्ति गीतों की प्रस्तुति भी दी गयी। 10.30 बजे कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।





विश्वविद्यालय स्थापना दिवस (26 सितंबर 2021)

विश्वविद्यालय के 134 वें स्थापना दिवस पर वृक्षारोपण अभियान पूरे परिसर में उत्साह के साथ आयोजित किया गया।
वी.सी. प्रो. संगिता श्रीवास्तव ने सुबह-सुबह पौधे लगाकर अभियान की शुरुआत की।

मा.कुलाधिपति श्री आशीष कुमार चौहान ने अपने संदेश में विश्वविद्यालय बंधुत्व को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह दिन भूतकाल के गौरव को मनाने और नए भविष्य को देखने का अवसर है।

माननीय कुलपति, प्रो संगिता श्रीवास्तव ने अपने संदेश में कहा कि उन्होंने पूरे विश्वविद्यालय समुदाय को अपने सभी प्रयासों में सहयोग और समर्थन देने के लिए एक बड़ी टीम के रूप में एक साथ आते देखा है, और वह विश्वविद्यालय को सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

परिसर को सुंदर बनाने और साफ करने का अभियान कोविड लॉकडाउन से पहले से ही जारी है।

संकाय सदस्यों और गैर शिक्षण कर्मचारी विभाग के सौंदर्यशास्त्र के अनुरूप विभिन्न सजावटी पौधों के पौधे लगाने के लिए एक साथ आए। गार्डन प्रभारी प्रो एनबी सिंह ने सुनिश्चित किया कि वृक्षारोपण अभियान में सहायता के लिए आवश्यक पौधे और माली उपलब्ध हों।

दीक्षांत समारोह 9 नवंबर 2021

The historic Senate Hall was stood with all its regal elegance bearing witness to the Convocation 2021 covered with colours galore in colours and flowers to lend it an unparalleled grace.

स्वर्णिम विजय मशाल

22 नवंबर 2021 को इलाहाबाद विश्वविद्यालय के विजय नगरम हॉल में शाम 5:30 बजे माननीय कुलपति प्रो० संगिता श्रीवास्तव ने स्वर्णिम विजय मशाल को एक स्मरणीय कार्यक्रम में ले. ज. एस०.मोहन जी से ग्रहण की। सन् 1971 में भारत पाकिस्तान युद्ध में भारतीय सशस्त्र बलों की ऐतिहासिक विजय की 50 वीं वर्षगांठ पर माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने राष्ट्रीय युद्ध स्मारक ज्वाला से इस मशाल को प्रज्वलित किया था। इस अवसर पर सेना ने सिंफनी बैंड बजया। प्रो० राजाराम यादव और श्लेष गौतम ने काव्यपाठ किया। संगीत विभाग के विद्यार्थियों ने गीत प्रस्तुति दी।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में 73वां गणतंत्र दिवस समारोह



शहीद दिवस

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की केंद्रीय सांस्कृतिक समिति एवं गांधी विचार एवं शांति अध्ययन संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में 'शहीद दिवस पर विशेष व्याख्यान और पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। गांधी की दृष्टि में शहीद भगत सिंह' विषय पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के सहआचार्य डॉ आशुतोष पार्थेश्वर ने बोलते हुए कहा कि राजगुरु, सुखदेव और भगत सिंह की शहादत गांधी की दृष्टि में व्यर्थ नहीं थी। भगत सिंह और गांधी दोनों का ही उद्देश्य समाज में समता और स्वतंत्रता संस्थापन था। दोनों के रास्ते भले ही अलग थे, लेकिन भगत सिंह भी मानवता की हत्या के पक्षपाती नहीं थे। भगत सिंह की क्रांति को समझने के लिए तत्कालीन दस्तावेजों को खंगालना होगा तभी हम भगत सिंह की क्रांति को समझ सकेंगे। गांधी का विचार था कि भुखमरी और बेरोजगारी से त्रस्त जनता सत्ता प्रतिष्ठानों से क्रांति के मार्ग पर चलकर नहीं लड़ सकती है। इसलिए अहिंसा और सत्य के मार्ग पर चलकर आजादी की लड़ाई को लड़ना होगा। डॉ पार्थेश्वर ने कहा कि गांधी घर के बुजुर्ग की भूमिका में थे, जिनके भीतर धैर्य समाया हुआ था। भगत सिंह घर के युवा की भूमिका में थे, जिसमें आक्रोश था, शीघ्रता थी, अति उत्साह था। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे समाजशास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर आशीष सक्सेना ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि यह भारत भगत सिंह और गांधी के सपनों का भारत है। जिसमें प्रेम और भाईचारे की महती आवश्यकता है। संघर्ष से नए रास्ते बनते हैं और आज जो हम खुली हवा में सांस ले रहे हैं वह गांधी और भगत सिंह के संघर्ष का ही परिणाम है। गांधी विचार एवं शांति अध्ययन संस्थान के निर्देशक प्रो० संतोष भदौरिया ने स्वगतवक्तव्य में व्याख्यान के शीर्षक के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए। गांधी और भगत सिंह को सही मायने में समझने पर बल दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ० अमृता ने किया। डॉ० फरीदा अहमद ने धन्यवाद दिया। विशेष सहयोग डॉ० जावेदा डॉ० अजय व हरिओम कुमार का रहा।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर त्रिदिवसीय कार्यक्रम का आयोजन हुआ। 6 मार्च 2022 द्विदिवसीय पोस्टर निर्माण कार्यशाला का आयोजन दृश्यकाला विभाग में हुआ। ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी व निबंध लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। 8 मार्च 2022 को डॉ० कुसुम त्रिपाठी का विशेष व्याख्यान हुआ। व्याख्यान का विषय था – विश्व में महिला : चुनौति और संभावनाएँ। सभी कार्यक्रम महिला अध्ययन केंद्र व केंद्रीय सांस्कृतिक समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किए गए।

विश्व योग दिवस (21 जून 2022)

आजादी का अमृत महोत्सव

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की केंद्रीय सांस्कृतिक समिति ने "आजादी का अमृत महोत्सव " के तहत लोरी लेखन, देशभक्ति गीत लेखन और रंगोली प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। तीनों प्रतियोगिताओं में करीब 250 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। सीनेट हॉल परिसर के गलियारे में चालीस समूहों ने जब रंगों की विभिन्न छटाओं में आजादी की घटनाओं को उकेरा तो वह 75 वर्ष पूर्व का इतिहास जीवंत हो उठा। रंग भले ही भिन्न भिन्न थे लेकिन उनकी सामूहिकता ने अनेकता में एकता को स्थापित किया तो उस समय परिसर में उपस्थित शिक्षकों और छात्रों का दर्शकों के रूप में कारवां बनता चला गया। रंगोली प्रतियोगिता के निर्णायक के रूप में डॉ. प्रिया केसरी एवं डॉ. ऋतु सुरेका ने सभी रंगोलियों का अवलोकन किया। जबकि देशभक्ति गीत लेखन प्रतियोगिता एवं लोरी लेखन प्रतियोगिता में लगभग 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इन प्रतियोग्यताओं में लिखे गए देशभक्ति गीत एवं लोरियों का मूल्यांकन दो सदस्यीय निर्णायक मंडल ने किया। इसमें डॉ. विनम्र सेन सिंह एवं डॉ. सुजीत सिंह ने योगदान दिया। विभिन्न प्रतियोगिताओं के अवलोकनार्थ विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. एन. के. शुक्ला, छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. के. पी. सिंह, अधिष्ठाता कला संकाय प्रो. हेरंब चतुर्वेदी, विश्वविद्यालय की पी. आर. ओ. प्रो. जया कपूर, हिंदी विभाग के प्रो. संतोष भदौरिया, विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक समिति के अध्यक्ष प्रो. अजय जेतली एवं सांस्कृतिक समिति के सदस्य उपस्थित रहे। इस दौरान विश्वविद्यालय कैम्पस में उत्सव का माहौल रहा और छात्र छात्राओं की उत्सवधार्मिता देखते ही बन रही थी।

दृश्यकला विभाग में 21 -22मार्च को पोस्टर निर्माण -कार्यशाला का आयोजन किया गया। पोस्टर निर्माण का विषय था -भारत के वीर सपूत। कार्यशाला में बने पोस्टरों की प्रदर्शनी गांधी मंडपम में लगाई गई। प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रो० आशीष सक्सेना व प्रो० अजय जेतली ने किया।

15 August 2022

वार्षिक आख्या सत्र : 2022 – 23

केंद्रीय सांस्कृतिक समिति इलाहाबाद विश्वविद्यालय

केंद्रीय सांस्कृतिक समिति इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी परिसर में विभिन्न साहित्यिक , सांस्कृतिक एवम् शैक्षणिक कार्यक्रम आयोजित किए।

विश्व पर्यावरण दिवस

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की केंद्रीय सांस्कृतिक समिति के तत्वावधान में 4 और 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर कई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। 4 जून को दृश्य कला विभाग में पर्यावरण से जुड़े मुद्दों पर पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 5 जून को ऑनलाइन संगोष्ठी स हुई। 'विश्व पर्यावरण के समक्ष चुनौतियाँ' शीर्षक पर व्याख्यान देते हुए इलाहाबाद विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो.ए. आर.सिद्दीकी ने कहा कि मौजूदा दौर में पृथ्वी पर पानी खत्म हो रहा है और हम मंगल ग्रह पर पानी खोज रहे हैं। जनसंख्या निरंतर बढ़ती जा रही है और प्राकृतिक संसाधनों का दोहन हो रहा है। वैश्वीकरण के दौर के बाद उपभोक्तावाद में तेजी से उछाल आया है मनुष्य अपनी सुविधाओं के कारण पर्यावरण का दुश्मन बन बैठा। अपने व्याख्यान में उन्होंने पर्यावरण की चुनौतियों और बदलते वैश्विक तापमान तथा बढ़ते प्रदूषण पर चिंता जताई। ऑनलाइन हुए इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक तथा शोधार्थी शामिल हुए। इस कार्यक्रम का संचालन केंद्रीय सांस्कृतिक समिति के सदस्य डॉ. चित्तरंजन कुमार ने किया और धन्यवाद ज्ञापन डॉ.अमृता ने किया।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में आज प्रातः 5:15 बजे से विजियानगरम हॉल परिसर में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मैसूरू में सुबह आयोजित कार्यक्रम का सीधा प्रसारण हुआ। उसके बाद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो के साथ संगीता श्रीवास्तव। सभी डीन, शिक्षक, शिक्षकेतर स्टाफ व छात्र छात्राओं द्वारा सामूहिक योगाभ्यास किया गया।

इस वर्ष मानवता के लिए योग के अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की थीम को आत्मसात करते हुए आजादी के अमृत महोत्सव पर देश के 75 ऐतिहासिक स्थानों पर आयोजित कार्यक्...

और देखें

07-06-2022 से 21-06-2022 तक अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर पोस्टर निर्माण कार्यशाला, योग प्रशिक्षण कार्यशाला , ऑनलाइन व्याख्यान , ऑनलाइन आशु भाषण प्रतियोगिता , ऑनलाइन प्रश्नोत्तरि, ऑनलाइन निबंध प्रतियोगिता, ऑनलाइन वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय की केंद्रीय सांस्कृतिक

समिति और राष्ट्रीय सेवा योजना के संयुक्त तत्वावधान में एक पखवाड़े के कार्यक्रम के तहत आज दृश्य कला विभाग में पोस्टर निर्माण कार्यशाला का आयोजन प्रातः 10:00 बजे से हुआ। पोस्टर निर्माण का विषय था - योग की वैश्विक स्थिति और महामारी। जब रंग और कूची का संयोजन एक साथ हुआ तो विद्यार्थियों के मनोभाव साकार हो उठे। प्रतियोगिता में करीब तीस प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। इस कार्यक्रम का संयोजन डॉ० धर्मेन्द्र, डॉ० अजय जैसवाल और संतोष कुमार ने किया। विभाग के सभी शोधार्थी और विद्यार्थी उपस्थित रहे।





कारगिल विजय दिवस

कारगिल विजय दिवस इलाहाबाद विश्वविद्यालय में विजियानगरम हॉल के परिसर में मनाया गया। कुलपति प्रो संगीता श्रीवास्तव ने शिक्षकों, शिक्षकेतर कर्मचारियों और छात्रों का नेतृत्व कर कारगिल के शहीदों को श्रद्धांजलि दी जिन्होंने देश की रक्षा के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया। कुलपति और डीन और प्रमुखों सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा पुष्प श्रद्धांजलि अर्पित की गई। शहीदों की याद में मौजूद सभी लोगों ने मोमबत्ती जलाई। जैसे ही सूरज डूब रहा है, विजियानगरम हॉल पोर्टिको और इसकी दीवारे उस क्षण की साक्षी बन रही थीं।



प्रेमचंद जयंती

कथा सम्राट और इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पुरातन छात्र रहे प्रेमचंद की जयंती पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय परिसर स्थित प्रतिमा पर रविवार को सुबह-सुबह माल्यार्पण -पुष्पार्पण किया गया | इस अवसर पर उपस्थित थे वरिष्ठ कवि-आलोचक प्रो. राजेंद्र कुमार , भूगोलविभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो.बी.एन.सिंह , मध्यकालीन-आधुनिक इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रो. आलोक प्रसाद , युवा समीक्षक डॉ. कुमार वीरेंद्र , रज्जू भैया विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. आशुतोष कुमार सिंह, प्रयाग पथ के संपादक हितेश कुमार सिंह, मेरी लूकस स्कूल के हिंदी शिक्षक डॉ धारवेंद्र प्रताप त्रिपाठी ,इतिहास के डॉ. अनिल कुमार यादव , विनोद यादव, कौशाम्बी कॉलेज के प्राचार्य डॉ रवींद्र सिंह,पूर्व उप शिक्षा निदेशक बेसिक एस डी सिंह,पूर्व शिक्षा अधिकारी डॉ वर्मा,डी तिवारी,प्रकाश कुमार,आशीष और अन्य उपस्थित रहें| माल्यार्पण के उपरान्त विद्वानों ने अपने विचार रखें |

आजादी के अमृत महोत्सव

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की केंद्रीय सांस्कृतिक समिति के तत्वावधान में आजादी के 75 वें वर्ष में 'आजादी के अमृत महोत्सव पर' 10 अगस्त 2022 को दृश्यकला विभाग में फेस पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। 34 छात्र और छात्राओं इस प्रतियोगिता में भाग लिया। रंगों के माध्यम से कलाकारों ने प्रेम, करुणा, शांति, त्याग, वीरता आदि भावों को इतना बखूबी तरीके से उकेरा कि वह भाव सौंदर्य मनोरम छटा बनकर केवल दृश्यकला विभाग तक सीमित न रहा, बल्कि हिंदी विभाग के विद्यार्थियों ने जब सफेद परिधान में तीन रंगों से सजी पोशाक पहनकर अपराह्न फेरी के लिए शहीद पद्मधर की प्रतिमा पर एकत्रित हुए तब फेसपेंटिंग वाले प्रतियोगियों ने शहीद पद्मधर को नमन कर उस रैली का हिस्सा बने। शहीद पद्मधर के प्रतिमा से वह अपराह्न फेरी भारत माता की जय और वंदे मातरम के उदघोष के साथ सीनेट हॉल के सामने वाले मैदान में पहुंची। संगीत विभाग के विद्यार्थियों ने देशप्रेम से ओतप्रोत एक लोक नृत्य की प्रस्तुति दी। संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग के छात्र-छात्राओं ने झंडारोहण स्थल पर मुक्ता काशी संगीतमय नृत्य एवं गीत की प्रस्तुति दी। गीत के बोल थे "कौमी तिरंगे झंडे ऊंचे रहो जहां में"। इस प्रस्तुति में 40 छात्र-छात्राओं ने प्रतिभागिता की। इस प्रस्तुति का निर्देशन विभाग के सहायक आचार्य डॉ. विशाल जैन द्वारा किया गया। पूरे कार्यक्रम का संयोजन प्रो. अजय जैतली के निदेशन में डॉ. अमृता एवं डॉ. प्रिया केशरी ने किया। विशेष सहयोग दृश्यकला विभाग के शोधार्थी धर्मेन्द्र और मंजू का रहा। डॉ. फरीदा अहमद पूरे आयोजन के दौरान उपस्थिति रहीं।

हर घर तिरंगा

विश्वविद्यालय में आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत कुलपति प्रो संगीता श्रीवास्तव सहित विश्वविद्यालय के शिक्षकों ने विज्ञान संकाय में फेरी निकाली और विजयनगराम हॉल में तिरंगा में राष्ट्रगान और राष्ट्रगीत गाकर हर घर तिरंगा के संदेश को प्रसारित किया।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में 'आजादी का जश्न नुक्कड़ नाटक के संग '

13 अगस्त 2022 को इलाहाबाद विश्वविद्यालय की केंद्रीय सांस्कृतिक समिति के तत्वावधान में आजादी के 75 वें वर्ष में 'आजादी के अमृत महोत्सव' पर 'परिवार एवं समुदाय विज्ञान विभाग' द्वारा नुक्कड़ नाटक 'मतदाता के अधिकार और उत्तरदायित्व' विषय पर सीनेट हॉल परिसर में आयोजित हुआ। लगभग 100 छात्र-छात्राएं दर्शक के रूप में मौजूद थे। यह नुक्कड़ नाटक परिवार और सामुदायिक विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय की बीए/बीएससी तृतीय वर्ष की 25 छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया। नुक्कड़ नाटक का उद्देश्य छात्र-छात्राओं और आम-जनता के बीच में ईवीएम के उपयोग और नैतिक मतदान के बारे में जागरूकता पैदा करना था। आजादी के अमृत महोत्सव त्रिदिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत इस नुक्कड़ की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम प्रो. अजय जैतली, अध्यक्ष, सांस्कृतिक समिति के निर्देशन में आयोजित किया गया। इस नुक्कड़ नाटक का लेखन एवं निर्देशन डॉ. फरीदा अहमद, सहायक आचार्य, परिवार एवं समुदाय विज्ञान विभाग ने किया। इस अवसर पर डॉ. अमृता उपस्थित रहीं।

स्वतंत्रता दिवस (15 August 2022)

विश्वविद्यालय में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर छात्रों से खचाखच भरे सीनेट हॉल प्रांगण में कुलपति प्रो संगीता श्रीवास्तव ने ध्वजारोहण किया। संपूर्ण प्रांगण वंदे मातरम और भारत माता की जय के उदघोष से गूंज उठा। अपने उद्बोधन में कुलपति महोदय ने छात्रों और शिक्षकों को विश्वविद्यालय को देश के अग्रणी संस्थाओं में लाने के निरान्तर और भरसक प्रयास करने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि उनका प्रयास विश्वविद्यालय की प्रगति राह प्रशस्त करना है। सबके साथ आने पर ही यह बदलाव संभव है उन्होंने कहा कि राह में मुश्किलें आना भी यह दिखाता है कि हम आगे बढ़ रहे हैं। दशकों के बाद इतना बड़ा छात्र समूह ध्वजारोहण समारोह में शामिल था और पूरे जोश से कुलपति के देशसेवा और संस्था के पुनरुत्थान प्रयास के आवाहन पर करतल ध्वनि और जय उदघोष से स्वागत कर रहा था।

इस अवसर पर कुलपति ने विश्वविद्यालय के सौंदर्यीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे माली और सफाई कर्मचारियों को टी शर्ट देकर उनका उत्साहवर्धन किया।

इस अवसर पर शिक्षकों द्वारा विश्वविद्यालय के चारों परिसरों में पौधरोपण भी किया गया।

शिक्षक दिवस

जुनून हो तो पर्वत रास्ता देते हैं - कुलपति प्रो संगीता श्रीवास्तव*

आज इलाहाबाद विश्वविद्यालय के ऐतिहासिक विजयनगरम हॉल में शिक्षक दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर संगीता श्रीवास्तव ने प्रोफेसर मनमोहन कृष्णा तथा प्रोफेसर एलडीएस यादव को उनकी सेवाओं के लिए पुष्पगुच्छ और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

सम्मान समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रोफेसर संगीता श्रीवास्तव ने कहा कि शिक्षक ही राष्ट्र का निर्माता होता है। विद्वता और छात्रों के प्रति स्नेहपूर्ण आचरण ही किसी शिक्षक को महान बनाता है। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पुराने अध्यापकों को याद करते हुए कहा कि जब हमारे पास संसाधन कम थे तब भी कई अध्यापकों ने विश्व स्तरीय कार्य किया। कुलपति ने कहा कि अगर काम करने का जज्बा हो और लक्ष्य को पाने का जुनून हो तो पर्वत भी रास्ता देता है। उन्होंने :-

वृक्ष कबहुँ नहीं फल भखै, नदी न संचै नीरा

परमार्थ के कारने, साधु धरा सरीरा।

जैसे दोहे का उदाहरण देकर बताया कि शिक्षक का पूरा जीवन परमार्थमें ही गुजरता है। शिक्षक अपना जीवन और अपना शरीर छात्रों के लिए होम कर देता है।

इस अवसर पर प्रो मनमोहन कृष्ण ने भी अपने अनुभवों को साझा किया। उन्होंने विजय नगरम हॉल के पुनर्निर्माण के लिए कुलपति की प्रशंसा की। प्रोफेसर एलडीएस यादव ने कहा कि उन्होंने कई विदेशी विश्वविद्यालयों में भी थोड़े समय के लिए काम किया है, पर जो लगाव उन्हें इलाहाबाद विश्वविद्यालय से है वह किसी अन्य विश्वविद्यालय से नहीं

कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रोफेसर नरेंद्र कुमार शुक्ला, डीन कॉलेज डेवलपमेंट प्रोफेसर पंकजकुमार, कुलानुशासक प्रोफेसर हर्ष कुमार, प्रोफेसर शिव मोहन प्रसाद , प्रोफेसर धनंजय यादव , प्रोफेसर आशीष सक्सेना , प्रोफेसर पीके घोष , प्रोफेसर नीलम यादव, प्रोफेसर आर के चौबे, समेत सैकड़ों शिक्षक और विभागाध्यक्ष उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ जया कपूर ने किया।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के केंद्रीय सांस्कृतिक समिति के तत्वावधान में शिक्षक दिवस के अवसर पर " संतो भाई आई ज्ञान की आंधी" विषय पर ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया गया। काशी हिंदू विश्वविद्यालय के वरिष्ठ आचार्य प्रोफेसर सदानंद शाही ने विषय पर बोलते हुए कहा कि गुरु और शिक्षक में काफी भेद है। गुरु का संबंध परा विद्या से है जबकि शिक्षक का संबंध अपरा विद्या से है। प्रो. सदानंद शाही ने इस बात पर जोर दिया कि सिर्फ सूचनाओं का संग्रह ही ज्ञान नहीं है बल्कि ज्ञान का अर्थ है विवेक और संवेदना का विकास। वैश्वीकरण ने ज्ञान को भी उत्पाद में बदल दिया है। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में सर्वपल्ली राधाकृष्णन के योगदान को याद करते हुए बताया कि सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने शिमला स्थित राष्ट्रपति निवास को भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान में तब्दील कर दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर अमृता ने किया। डॉक्टर चितरंजन ने स्वागत वक्तव्य दिया तथा डॉ प्रिया केशरी ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर केंद्रीय सांस्कृतिक समिति के अध्यक्ष प्रो अजय जेटली, प्रोफेसर संतोष भदौरिया, डॉ हरिओम समेत कई शिक्षक और छात्र उपस्थित रहे।





गांधी सप्ताह'

गांधी विचार एवं शांति अध्ययन संस्थान, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा 'गांधी सप्ताह' का शुभारंभ। विशेष व्याख्यान, लेखक से संवाद एवं विद्यार्थियों हेतु होगा अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन।
गांधी की नज़र में सिनेमा एक औद्योगिक कला है: प्रो. ललित जोशी
सिनेमा में भी गांधी का दायरा बड़ा है: प्रो. प्रणय कृष्ण

गांधी विचार एवं शांति अध्ययन संस्थान, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा आज 'गांधी सप्ताह' का उद्घाटन हुआ। विशेष व्याख्यान के अंतर्गत आज प्रो. ललित जोशी ने 'सिनेमा में गांधी' विषय पर व्याख्यान दिया। अध्यक्षीय वक्तव्य प्रो. प्रणय कृष्ण और स्वागत वक्तव्य संस्थान के निदेशक प्रो. संतोष भदौरिया ने दिया।

स्वागत वक्तव्य में प्रो. भदौरिया ने कहा कि गांधी के जीवन एवं विचार से पुनः पुनः संवाद करने की ज़रूरत है। गांधी को अलग-अलग आयामों में जानने और समझने प्रयास युवा पीढ़ी को करना चाहिए। गांधी को कुछ तिथियों तक सीमित करना ठीक नहीं है। गांधी और सिनेमा के रिश्ते को समझने में यह व्याख्यान हमारी मदद करेगा।

प्रो. ललित जोशी जी ने कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन में सिनेमा की बड़ी भूमिका थी। 20 वीं शताब्दी के आरंभ से ही सिनेमा को सामने लाने की तमाम कोशिशें तेज हुईं। सिनेमा एक औद्योगिक कला है। गांधी के मन में सिनेमा और कला को लेकर संशय था। गांधी ने अनेक अवसरों पर फ़िल्म देखने से इंकार कर दिया था। सिनेमा जनित संस्कृति को लेकर उनका संशय लगातार कायम रहा। वह इस संस्कृति को भारतीय जीवन संस्कृति के लिए उचित नहीं समझते थे। एक जगह उन्होंने कहा था कि 'सिनेमा पाप है' और मैं इस पाप से सम्बद्ध नहीं होना चाहता। दीवाल पर लगे सिनेमा संबंधी पोस्टर को उन्होंने अश्लील कहा और सिनेमा को लेकर उनकी दृष्टि कुछ अलग ही थी।

सिनेमा को लेकर उनकी सोच बड़ी सीमित थी। तभी उन्होंने कहा था कि सिनेमा नाटक देखने से युवाओं की बरबादी होती है। सिनेमा थियेटर बिल्कुल बंद करना चाहिए। कुमार स्वामी भी गांधी की ही तरह औद्योगिक कला के विरुद्ध थे। बेंजामिन जैसे विचारक ने कहा था कि औद्योगिक कला से कला की वास्तविक आभा क्षीण होती है। हालांकि, गांधी की सिनेमा संबंधी जो सोच थी, वह उस दौर के तमाम बड़े चिंतकों की भी थी। प्रेमचंद की भी सिनेमा की संस्कृति को

लेकर राय बड़ी तीखी थी। हालांकि गांधी जी को सिनेमा से परहेज भले था लेकिन खुद अपने जीवन पर बनी डॉक्यूमेंट्री को वह चाव से देखते थे।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रो. प्रणय कृष्ण ने कहा कि छात्र जीवन से ही इस परिसर से बहुत सी यादें जुड़ी हैं। गांधी और सिनेमा के नकार वाले रिश्ते को लेकर उन्होंने बताया कि इस संस्थान के निदेशक रहे बनवारी लाल शर्मा जी ने भी गांधी के सिनेमा संबंधी विचारों से प्रेरित होकर अपने दौर में अश्लीलता के विरुद्ध आंदोलन चलाया था। हालांकि अब कला के नाम पर जो कुछ चल रहा है, उसे सेंसर बोर्ड देख ही रहा है और हम सबके सामने भी आ ही रहा है। उन्होंने सिनेमा में अपसंस्कृति को खारिज करने के महत्व को बताया। साथ ही एटेनबरो की गांधी जीवन से संबंधी फिल्म की भी चर्चा की।

इस अवसर पर गांधी जी के जीवन पर आधारित कुछ वृत्तचित्रों और उनकी लंदन यात्रा से संबंधित वृत्तचित्रों का प्रदर्शन भी किया गया। वक्तव्य के बाद श्रोताओं ने कुछ सवाल किये, जिसका जवाब प्रो ललित जोशीने दिया। इसके पश्चात गांधी मंडपम में गांधी जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि हुई।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. धीरेंद्र धवल और धन्यवाद ज्ञापन हरिओम कुमार ने किया। इस कार्यक्रम में प्रो जयशंकर, प्रो. सालेहा रसीद, कथाकार असरार गांधी, अनिल रंजन भौमिक, डॉ. सुनील विक्रम, डॉ. कुमार वीरेंद्र, डॉ. अमृता, डॉ. वीरेंद्र मीणा, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. रेहान, दिव्या, राहुल कुमार, धर्मवीर सरोज, अतुल सिंह, निशांत, सृष्टि, प्रतिमा, श्वेता सहित बड़ी संख्या में शोधार्थी और विद्यार्थी मौजूद रहे।

राष्ट्रीय एकता दिवस

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में आज आधुनिक भारत के निर्माता सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया गया। इस सुबह सभी शिक्षक सीनेट हॉल परिसर में मौजूद रहे। उन्होंने शपथ ग्रहण किया और वाक फ़ॉर यूनिटी में सम्मिलित हुए। डीन विज्ञान संकाय प्रो शेखर श्रीवास्तव, कुलसचिव प्रो एन के शुक्ला, डीन कॉमर्स प्रो पी के घोष, पी आर ओ डॉ जया कपूर, डॉ अजय जेटली, डीएस डब्ल्यू प्रो एस एम प्रसाद, प्रो अर्चना चहल, प्रो नीलम यादव, प्रो नीतू मिश्रा, प्रो इन्द्रानी मुखर्जी सहित विभागाध्यक्ष एवं शिक्षक समारोह में उपस्थित रहे।



दीपोत्सव November 2022

विश्वविद्यालय का विज्ञियानागराम हाल में आज दीवाली के दिवों से जगमगा उठा जब विश्वविद्यालय की सभी महिला शिक्षक शाम ढले दीपोत्सव के लिए साथ आईं कार्यक्रम विशेष रूप से केवल महिला शिक्षकों के लिए आयोजित किया गया था। विज्ञियानागराम हॉल की खूबसूरती को चार चांद लग गए जब आसमान में शानदार आतिशबाजी की रोशनी से भर गया। कुलपति प्रो संगीता श्रीवास्तव ने सभी महिला शिक्षकों के साथ प्रांगण में दिए और फुलझड़ीजला करधनतेरस और दीपावली की शुभकामनायें दी।

गणतंत्र दिवस

गणतंत्र दिवस 2023 इलाहाबाद विश्वविद्यालय के लिए एक महत्वपूर्ण दिवस रहा। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर संगीता श्रीवास्तव को एनसीसी की तरफ से कर्नल की मानद उपाधि प्रदान करी गयी और उन्हें विश्वविद्यालय का कर्नल कमांडेंट बनाया गया। पिपिंग सेरेमनी के बाद एन सी सी के कैडेट्स द्वारा कुलपति को गार्ड ऑफ ऑनर दिया। इस अवसर पर एनसीसी के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे। तदोपरांत छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों से खचाखच भरे सीनेट हाउस परिसर में कुलपति द्वारा झंडारोहण किया गया। इस अवसर पर संगीत विभाग द्वारा एक सामूहिक नृत्य-गीत का मंचन किया गया। अपने संबोधन में कुलपति प्रो संगीता श्रीवास्तव ने कहा

"संविधान में हमें कुछ अधिकार के साथ ही और कुछ कर्तव्य दिए हैं जिनको हमें अपनी पूरी निष्ठा से पालन करना है ताकि एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण हो सके। जब मैंने इस विश्वविद्यालय के कुलपति का कार्यभार ग्रहण किया तो मेरा लक्ष्य स्पष्ट और विश्वास दृढ़ था कि अपनी कर्तव्यनिष्ठा से इस संस्था को सींच कर विश्वविद्यालय को राष्ट्रपटल पर अपनी पहचान बनाने के अवसर का सदुपयोग करना है। आज सब के सहयोग से 242 शिक्षक नियुक्त हो चुके हैं और गैर शिक्षक पदों की नियुक्तियां अंतिम दौर में हैं। अधिकार के साथ कर्तव्य जोड़ा जाता है। छात्र मन लगाकर पढ़ें, शिक्षक अध्यापन करें तथा अधिकारी संरचनात्मक सहयोग प्रदान करें तो यह विश्वविद्यालय अपने अभीष्ट को अवश्य प्राप्त करेगा। भारत समूचे विश्व के लिए मार्गदर्शक बन चुका है और रिवर्स माइग्रेशन को हम गर्व से देख रहे हैं। भारत की वस्तुओं का देश में प्रयोग अधिकाधिक हो रहा है और पांच सितारा होटलों तक में कुल्हड़ में चाय पिलाई जाती है। हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों को देखते हुए अपने संसाधनों का प्रयोग समझदारी से करना होगा। समाज में संस्कृति, परिवार और संस्कार का ताना-बाना टूट रहा है और हम गुरु की अपनी भूमिका में इस संस्कृति को टूटने से बचा सकते हैं। हमें ऐसे युवा बनाने हैं जो अपनी योग्यता से सशक्त और समर्थ भारत के निर्माण में सहयोग दें योगदान दें। शिक्षा का हस्तकला का संयोजन नितांत आवश्यक है और हमें इसे विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना जरूरी है।" इस अवसर पर कुलपति द्वारा अंग्रेजी एवं हिंदी में आयोजित हुई निबंध प्रतियोगिताओं के विजेताओं को 3000/- रुपये और प्रमाण पत्र दिये। अंग्रेजी प्रतियोगिता की विजेता बी ए तृतीय वर्ष की छात्रा पल्लवी एवं हिंदी प्रतियोगिता की विजेता बी ए द्वितीय वर्ष की छात्रा मानसी गुप्ता रहीं। कुछ अन्य प्रविष्टियों को प्रमाणपत्र दिए जाएंगे। इस अवसर पर माननीय कुलपति द्वारा सात महिला कर्मचारियों को प्रोत्साहन स्वरूप साड़ी देने की घोषणा भी करी गयी।







अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस

8 मार्च 2023 के अवसर पर आज इलाहाबाद विश्वविद्यालय परिसर के ऐतिहासिक सीनेट हाल परिसर में दृश्य कला विभाग के छात्र छात्राओं ने भूमि पर रंगोली सृजन किया। जिसमें महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण की अनिवार्यता को दर्शाया गया है।

स्त्री; प्रकृति की वह ताकत है जिससे यह पृथ्वी गतिशील है। अनेक दुश्चारियों एवं संघर्ष के बावजूद वह अपनी नैसर्गिक भूमिका का निर्वहन कर रही है और दुनिया को अपने कौशल एवं दृष्टि से समृद्ध कर रही हैं। विश्वविद्यालय को गर्व है कि प्रथममहिला कुलपतिके रूप में माननीया प्रोफेसर संगीता श्रीवास्तव जी ने अपने कुशल नेतृत्व से मात्र दो वर्ष के अल्प समय में ही अपने सकारात्मक निर्णयों से विश्वविद्यालय को नई दिशा प्रदान की है।

दृश्य कला के छात्र छात्राओं- अजय गुप्ता, मनोज कुमार, अंजलि यादव, खुशी सोनकर, प्रिंस त्रिपाठी, जयकिशन, बादल एवं अभयराज ने रंगोली की संरचना की।

प्रोफेसर एन के शुक्ल, कुलसचिव, प्रोफेसर हर्ष कुमार, कुलानुशक एवं प्रोफेसर जया कपूर, पी.आर.ओ. ने छात्र-छात्राओं का उत्साहवर्धन किया।

होली के आकांक्ष होने के बावजूद इस मौके पर प्रोफेसर अजय जैतली, विभागाध्यक्ष, दृश्य कला विभाग व विश्वविद्यालय के अनेक कर्मचारी व अधिकारीगण उपस्थित रहे।





होली मिलन समारोह (2023)

आज इलाहाबाद विश्वविद्यालय की केंद्रीय सांस्कृतिक समिति ने होली मिलन समारोह का आयोजन विज्ञान संकाय के ऐतिहासिक विजयनगरम हॉल के सामने वाले परिसर में आयोजित किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की माननीया कुलपति प्रो.संगीत श्रीवास्तव के आगमन ने पूरे आयोजन को उदात्त गरिमा प्रदान की। केंद्रीय सांस्कृतिक समिति के अध्यक्ष प्रो.अजय जैतली ने इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि कुलपति महोदया का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया। प्रो.प्रेमकुमार मलिक के शास्त्रीय चैती गायन ने फाग के उल्लास को जब वाणी दी तो स्वरों की भावधारा में सभी दर्शक गुनगुनाने लगे। संगीत विभाग के विद्यार्थियों के समूह गान में ब्रज और अवध प्रान्त की पारंपरिक होली और नृत्य की प्रस्तुति ने हुरियारे की लहर को तरंगायत किया। थोड़ी देर को अबीर तरंगायत होकर फिजा में तैरने लगा। संगीत विभाग के सह आचार्य डॉ. सुरेंद्र कुमार की गायकी में सोहर, होली, कजरी और बनारसी दादरा ने सावन और फागुन को संयोजित कर शाम की मधुरिमा को और मधुरित कर दिया। सांस्कृतिक समिति के सभी सदस्यों ने स्मृति चिह्न देकर कुलपति महोदया का सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन प्रो.जया कपूर ने किया और धन्यवाद डॉ. प्रिया केशरी ने दिया। दृश्य कला विभाग के शोधार्थी और विद्यार्थियों ने रंगोली में रंगों की छटा उकेरी। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव व सभी शिक्षक उपस्थित रहे ॥

आज दृश्य कला विभाग में तीन दिवसीय कला प्रदर्शनी का उद्घाटन पूर्व विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग एवं वरिष्ठ आलोचक प्रोफेसर राजेंद्र कुमार द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। यह प्रदर्शनी 12, 13 व 14 दिसंबर 2022 तक दृश्य कला विभाग में प्रदर्शित है। इस प्रदर्शनी में करीब 81 प्रतिभागियों की 133 पेंटिंग्स का प्रदर्शन किया गया है। विभागाध्यक्ष प्रोफेसर अजय जेतली, डॉ० संदीप कुमार मेघवाल, डॉ० सचिन सैनी एवं सौमिक नंदी के सानिध्य में दृश्य कला विभाग के विद्यार्थियों के द्वारा यह प्रदर्शनी आयोजित की गई है। इस प्रदर्शनी का श्रेय बी.एफ. चतुर्थ वर्ष के छात्र-छात्राओं को जाता है जिन्होंने न केवल लॉकडाउन के बाद सृजन कर्म में आई उस नीरसता को भंग किया है बल्कि अपने अनुभव में नवीन ऊर्जा का संचार भी किया है। इस प्रदर्शनी में एम.ए. एम.एफ.ए., बी.एफ.ए. एवं बी.ए. के छात्र-छात्राओं ने नवीनतम कला प्रयोगों को प्रदर्शित किया है। प्रो० राजेन्द्र कुमार ने कहा कि कला की मुख्यधारा में हो रहे बदलाव की तस्वीर, मानवीय बोध एवं सामाजिक सरोकारों को प्रदर्शनी में प्रदर्शित चित्रों में देख सकते हैं। सभी युवा कलाकार अपने प्रयोगों के द्वारा भिन्न-भिन्न कला माध्यमों में सृजनशीलता के साथ कला की पारंपरिक सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए कला में नए क्षितिज की ओर अग्रसर है, यह आभास इस प्रदर्शनी से सहज रूप में हो रहा है। शहर के प्रमुख रंगकर्मी अनिल रंजन भौमिक ने कहा कि समसामयिक कला में नए प्रयोगों एवं शोध से राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय कला जगत में दृश्य कला विभाग की यह प्रदर्शनी निश्चित रूप से कुछ नए आयाम जोड़ेगी। इस अवसर पर हिंदी विभाग के सह आचार्य डॉ० कुमार बीरेंद्र ने कहा कि प्रदर्शनी में प्रदर्शित चित्र मनुष्यता के पक्ष का उद्घाटन है। हिंदी विभाग की सहायक आचार्य डॉ० अमृता ने रंग संयोजन और भावबोध की सराहना की। इस प्रदर्शनी में शोधार्थी धर्मेन्द्र कुमार, मंजू यादव, पूजा कुशवाहा, सप्तमी पाल, चंद्रकला प्रजापति, रेनू जैसवाल, आकांक्षा कश्यप और मल्लिका साहू का सराहनीय योगदान रहा। इस अवसर पर रौशन लाल, बदामा देवी, शीला देवी का सहयोग रहा।









वार्षिक आख्या सत्र : 2023 – 24

केंद्रीय सांस्कृतिक समिति इलाहाबाद विश्वविद्यालय

विश्व पर्यावरण दिवस, 05 जून, 2023

पर्यावरण अध्ययन केंद्र ने 5 जून 2023 को 'प्लास्टिक प्रदूषण के समाधान' विषय के तहत विश्व पर्यावरण दिवस मनाया। इसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय की माननीय कुलपति प्रोफेसर संगीता श्रीवास्तव ने की। कार्यक्रम की शुरुआत माननीय कुलपति जी द्वारा पौधे रोपण के साथ हुई और उसके बाद उनके उद्घाटन संबोधन के साथ हुई। उन्होंने वर्ष में सिर्फ एक दिन पर्यावरण दिवस मनाने पर जोर नहीं दिया बल्कि हर एक दिन पर्यावरण के संरक्षण पर जोर दिया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2023

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2023 के अवसर पर विजयानगरम हॉल में योग अभ्यास सत्र का आयोजन किया गया। योग शिक्षक श्री अखिलेश तिवारी के मार्गदर्शन में उपकुलपति प्रो संगीता श्रीवास्तव सहित बड़ी संख्या में संकाय सदस्यों और प्रशासनिक अधिकारियों ने सुबह-सुबह भाग लिया।

कारगिल विजय दिवस(26 July 2023)

विश्वविद्यालय में आज का कारगिल विजय दिवस मनाया गया जिसमें विश्वविद्यालय के शिक्षकों छात्रों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं गैर- शिक्षक कर्मचारियों ने कारगिल शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। कुलपति प्रो संगीता श्रीवास्तव ने सबसे पहले मोमबत्ती जला कर एवं पुष्प अर्पित कर शहीदों की शहादत को याद किया। जिसके उपरांत सभी उपस्थित लोगों ने मोमबत्ती जलाकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर बड़ी संख्या में शिक्षको और कर्मचारियों के अलावा छात्र उपस्थित थे।





विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस (14 August) देश के स्वतंत्रता दिवस का जश्न राष्ट्रीय स्मृति में विभाजन की छाया के साथ आता है। इतिहास का सबसे बड़ा मानव विस्थापन देश के बटवारे के दौरान दंगों में मारे गए लाखों लोगों के खून से नहला गया। जहां देश 77वें स्वतंत्रता दिवस को मनाने के लिए तैयार है, वहीं विभाजन की यादों को ताजा कर दिया गया क्योंकि 14 अगस्त को विश्वविद्यालय में एक प्रदर्शनी के साथ विभाजन की यादें ताजा हुईं। कुलपति प्रो संगिता श्रीवास्तव ने दीप प्रज्ज्वलित कर प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। कुलपति महोदय के साथ कार्यक्रमका शुभारंभ

विभाजन के दर्दनाक दौर में जान गवाने वाले लोगों की याद में पुष्प चढ़ाकर मोमबत्ती जलायी।

प्रदर्शनी को देखने के बाद उसने अपने विचार साझा किए और कहा कि विभाजन द्वारा लाया गया आघात, दर्द और पीड़ा अविश्वसनीय है। उसका अपना मातृ परिवार लाहौर से विस्थापित हो गया था और वह समझती है कि किसी का घर, सामान और यहां तक कि पहचान और जड़ें खोने का क्या मतलब है। प्रदर्शनी युवाओं को विभाजन की भयावहता की कहानी बताएगी ताकि राष्ट्र की सामूहिक स्मृति याद रखे और अतीत की गलतियों को न दोहराए।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान के बाद पिछले दो वर्षों से यह दिन मनाया जा रहा है। यह केंद्र सरकार के सभी संस्थानों और संगठनों में मनाया जा रहा है।



स्वतंत्रता दिवस 2023

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में आज भारत का 77वां स्वतंत्रता दिवस हर्ष और उल्लास से मनाया गया। कुलपति प्रो संगीता श्रीवास्तव ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर सभी डीन, शिक्षकों, अधिकारियों तथा शिक्षणेतर कर्मचारियों के साथ ही बड़ी संख्या में छात्र छात्राएं मौजूद थे। सीनेट हाल के सामने का प्रांगण छात्रों छात्राओं से खचाखच भरा था और कुलपति के उद्बोधन के बीच बीच में तालियों और भारत माता की जय के स्वरों से सम्पूर्ण प्रांगण गूंज उठता था। अपने उद्बोधन में कुलपति प्रो संगीता श्रीवास्तव ने कहा कि छात्रों को ज्ञान अर्जन करना ना सिर्फ किताबों की बातों तक सीमित होना चाहिए अपितु सभी चौसठ कलाओं से परिपूर्ण व्यक्तित्व विकसित करने पर ध्यान देना चाहिए। विश्वविद्यालय में आ रहे बदलावों से छात्रों को शिक्षकों का सक्षम निर्देशन मिलेगा। अभी विश्वविद्यालय cuet में तीसरे स्थान पर था पर उनको विश्वास है की अगले वर्ष यह प्रथम स्थान प्राप्त करेगा। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ दिनों में विश्वविद्यालय में पठन पाठन का वातावरण पुनर्स्थापित करने के लिए कुछ कठोर कदम उठाए गए हैं और उन्हें विश्वास है की इनके विश्वविद्यालय के एकेडमिक वातावरण सुधारने में मदद मिलेगी और विश्वविद्यालय का गौरव वापस दिलाने जैसे दूरगामी परिणाम होंगे। उन्होंने विश्वविद्यालय के सुंदरीकरण के संदर्भ में कहा की एक शांत सुंदर माहौल पठन पाठन को प्रोत्साहित करता है। अब छात्र व्यवस्थित और सुंदर बगीचों और बेंच पर बैठ कर पढ़ाई कर सकते हैं।

इस अवसर पर उन्होंने दो नई इमारतों का भी उद्घाटन किया। पहली इमारत अर्ली चाइल्डहुड केयर सेंटर हैं जहां विश्वविद्यालय के शिक्षकों और कर्मचारियों के 2से 5वर्ष के बच्चों को प्रवेश दिया जाएगा। दूसरी इमारत ईश्वर टोपा कॉम्प्लेक्स है। श्री ईश्वर टोपा विश्वविद्यालय के पुराछात्र थे और यह इमारत उनके द्वारा दिए गए दान से बनवाई गई है। इसमें दो लैंग्वेज labs, ek state of art Auditorium और विश्वविद्यालय का इनक्यूबेशन सेंटर स्थित हैं।







विशिष्ट व्याख्यान-

केंद्रीय सांस्कृतिक समिति इलाहाबाद विश्वाविद्यालय द्वारा स्थापना दिवस पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किय गया ।

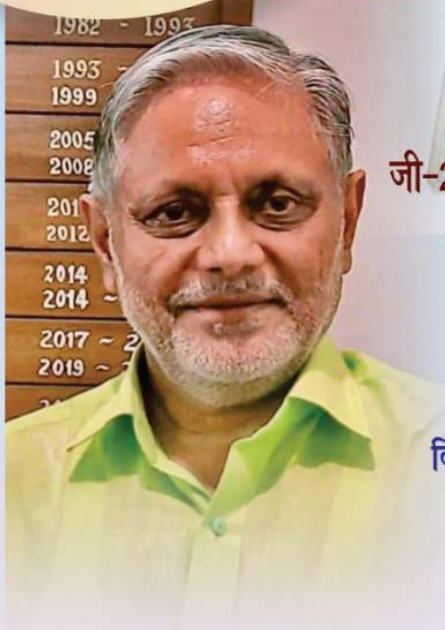
संरक्षक/मार्गदर्शक



प्रो० संगीता श्रीवास्तव
कुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय



केन्द्रीय सांस्कृतिक समिति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
द्वारा स्थापना-दिवस पर आयोजित
ऑनलाइन विशिष्ट व्याख्यान
में आप सादर आमंत्रित हैं।



विषय

जी-20 : भारतीय अध्यक्षता और युवाओं की अपेक्षाएं

मुख्य वक्ता:

प्रो० पंकज कुमार

वरिष्ठ शिक्षाविद् एवं डीन, सी.डी.सी. इलाहाबाद विश्वविद्यालय

दिनांक: 23 सितम्बर 2023, समय: 12:30 बजे

स्वागत वक्तव्य : प्रो० एन. के. शुक्ला,
कुलसचिव, इ.वि.वि.

संचालन : डॉ० चितरंजन सिंह

आभार : डॉ० अमृता,
हिंदी विभाग, इ.वि.वि.



गाँधी जयंती (स्वच्छता अभियान)

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को कल उनके जन्मदिन के उपलक्ष में आज अपने श्रमदान से अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए 'स्वच्छता ही सेवा' कार्यक्रम के अंतर्गत आज इलाहाबाद विश्वविद्यालय में सभी विभागों द्वारा अपने विभागों में स्वच्छता कार्यक्रम चलाया गया विश्वविद्यालय के स्तर पर सारे विश्वविद्यालय के विभिन्न प्रांगण में स्वच्छता अभियान चलाया गया और वृहद स्तर पर सफाई का कार्यक्रम किया गया छात्रों शिक्षकों एवं शिक्षेखर कर्मचारियों ने कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और स्वच्छ और सुदृढ़ भारत के निर्माण का संकल्प लिया विश्वविद्यालय के अकादमिक परिसरों के अलावा विश्वविद्यालय के सभी छात्रावास परिसरों में वृहद स्तर पर सफाई अभियान में के अंतर्गत कार्यक्रम आयोजित किया गया और श्रमदान कर सभी ने इस कार्यक्रम को सफल बनाया।

इस अवसर पर अपने संदेश में कुलपति प्रोफेसर संगीता श्रीवास्तव ने कहा कि निस्वार्थ श्रमदान और ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन अपनी जिंदगी का हिस्सा बना लेना ही राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी और उनके सपनों के सुदन भारत को साकार करने के लिए हमारा योगदान होगा।







UNIVERSITY OF ALLAHABAD
(A CENTRAL UNIVERSITY)



**स्वच्छता
ही सेवा**

15 सितम्बर से 02 अक्टूबर 2023

एक तारीख एक घण्टा

01 अक्टूबर 2023 

माननीया कुलपति
प्रो० संगीता श्रीवास्तव जी के कुशल नेतृत्व में

 **स्वच्छता अभियान**





में आप सादर आमंत्रित हैं ।

 **FRONT LAWN OF VIJAYNAGARAM HALL
FACULTY OF SCIENCE**

UNIVERSITY OF ALLAHABAD
PRAYAGRAJ UTTAR PRADESH - 211002





राष्ट्रीय एकता दिवस (31 अक्टूबर 2023)

सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती पर रन फॉर यूनिटी आयोजन में विश्वविद्यालय के शिक्षकों और छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।



अमृत कलश यात्रा

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की केंद्रीय सांस्कृतिक समिति के द्वारा मेरी माटी मेरा देश' आयोजन के तहत अमृत कलश यात्रा आयोजित की गई। इस यात्रा का उद्देश्य गुमनाम शहीदों को स्मरण करने का था। दृश्य कला विभाग की छात्राओं ने अमृत कलश तैयार किया।

अमृत कलश में शहीद के गांव की मिट्टी और चावल लाकर उस मिट्टी को नमन किया गया। नमन करने वालों में परीक्षा नियंत्रक अशोक कुमार कन्नौजिया, जन सम्पर्क अधिकारी प्रो. जया कपूर, उर्दू विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो.शबनम हमीद, हिंदी विभाग के प्रो. संतोष भदौरिया, डॉ. अमृता, डॉ. वीरेंद्र कुमार मीणा, डॉ. फरीदा अहमद उपस्थित रहे।

शोभायात्रा यात्रा सीनेट हॉल के शुरू होकर शहीद पद्मधर की समाधि तक निकाली गई। शाहीद पद्मधर की समाधि पर पहुंचकर पुष्पांजलि अर्पित की गई।

इस अवसर पर सैकड़ों की संख्या शोधार्थी और विद्यार्थी उपस्थित रहे।





सुर संगम (9 नवंबर 2023)

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में सुर संगम दीपों के साथ

दीपावली की पूर्व संध्या पर केंद्रीय सांस्कृतिक समिति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज द्वारा 'सुर संगम' का आयोजन निराला आर्ट विलेज (मुक्तांगन) में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के अध्यक्षता माननीय कुलपति प्रो. संगीता श्रीवास्तव ने की। सुर संगम के मुख्य अतिथि श्री विजय विश्वास पंत, मंडलायुक्त, प्रयागराज व विशिष्ट अतिथि श्री रमित शर्मा, पुलिस कमिश्नर, प्रयागराज थे।

शाम 6:00 बजे अतिथि आगमन हुआ। इस कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई। कुलसचिव महोदय ने आगंतुक अतिथि व कलाकारों का स्वागत पुष्पगुच्छ व स्मृति चिह्न देकर किया। गायक आशुतोष श्रीवास्तव व उनके साथी कलाकारों ने 'जय गणपति वंदन गणनायक' गणेश वंदना से सुर संगम में मंगलाचरण करते हुए शाम को यादगार बनाया।

हुजूर आपका भी एहताराम करता चलूं।

इधर से गुजरा तो सोचा सलाम करता चलूं ॥

इस गजल की प्रस्तुति ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

सुरमई शाम इस तरह आए

सांस लेते हैं जिस तरह साये

कोई आहट नहीं बदन की कहीं

फिर भी लगता है तू, यहीं है कहीं

गीत की प्रस्तुति ने श्रृंगार रस से पूरे मुक्तांगन को सराबोर कर दिया। श्रोताओं की करतल ध्वनि कलाकारों की हौसला अफजाई कर रही थी।

जब छिड़ी रात फूलों की

रात है या बरात फूलों की

मखदूम मोहिद्दीन रचित इस गजल ने मुक्तांगन में मौजूद श्रोताओं को खूब गुदगुदाया।

हरिवंश राय बच्चन द्वारा लिखित 'मधुशाला' से-

'सजे न मस्जिद और नमाजी कहता है अल्लाताला

सजधजकर पर साकी आता, बनठन कर पीने वाला' पंक्तियों को गाया गया तो दीपोत्सव की शाम संगीत के सुरों के साथ संगत करती हुई प्रतीत हुई।

'जब आंचल रात का लहराये

और सारा आलम सो जाए

तुम मुझसे मिलने शम्मा जलाकर

ताजमहल में आ जाना' गीत पर श्रोता खूब झूमे।

संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग द्वारा 'समूह नृत्य' व 'समूह गान' प्रस्तुत किया गया। निर्देशन डॉ. विशाल जैन ने किया। 'समग्र भारत' थीम पर दृश्यकला विभाग के 170 विद्यार्थियों 27 रंगोली बनाई। 250 विद्यार्थियों ने तीन हजार दिए जलाकर दीपोत्सव को यादगार बना दिया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलसचिव ने धन्यवाद ज्ञापित किया और

संचालन डॉ. शेफाली नंदन ने किया। इस अवसर पर वित्ताधिकारी, प्रो. जया कपूर, प्रो. अजय जैतली, प्रो. पंकज कुमार, प्रो. अनुराधा अग्रवाल, प्रो. हर्ष कुमार, प्रो. ए.आर. सिद्धी, डॉ. राकेश सिंह, डॉ. सचिन B सैनी, डॉ. संदीप मेघवाल, डॉ. अदिति पटेल, डॉ. शौमिक नंदी, डॉ. अमृता, डॉ. प्रिया केशरी, डॉ. फरीदा अहमद, डॉ. चितरंजन कुमार, डॉ. कुमार बीरेंद्र, छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।



इविवि कुलपति के कार्यकाल के तीन साल : अभिनन्दन समारोह का आयोजन प्रयागराज: 1/12/2023

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. संगीता श्रीवास्तव के कार्यकाल के तीन वर्ष पूर्ण होने पर शुक्रवार, एक दिसंबर को अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन विज्ञान संकाय के विजयनगरम् हॉल प्रांगण में किया गया।

ज्ञात हो कि प्रो. श्रीवास्तव ने 1 दिसंबर 2020 को कुलपति का कार्यभार संभाला था। इन्होंने अबतक के अपने कार्यकाल में विश्वविद्यालय में विभिन्न प्रकार के रचनात्मक परिवर्तन किये हैं। इन्होंने वर्षों से लंबित शिक्षकों एवं गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों की नियुक्ति कर विश्वविद्यालय के शैक्षिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त किया है। विश्वविद्यालय के इतिहास में यह पहली बार है कि किसी एक कुलपति के कार्यकाल में रिक्त पदों पर इतनी अधिक मात्रा में नियुक्तियाँ हुई हैं। यह प्रो. श्रीवास्तव की दूरदर्शिता और लगन का प्रमाण है कि उन्होंने विश्वविद्यालय को देशभर के चुने हुए मेधावियों की एक टीम दी।

अभिनन्दन कार्यक्रम में सिटाडेल ऑफ लर्निंग ' नाम से एक कॉफीटेबल बुक का विमोचन किया गया। इस पुस्तक का कार्यक्रम के दौरान कुलपति प्रो. संगीता श्रीवास्तव ने अपनी एक कविता 'मैं मालिन हूँ' द्वारा अपना उद्बोधन दिया। इस कविता के माध्यम से प्रो. श्रीवास्तव ने कहने की कोशिश की कि जिस प्रकार प्रकृति बिना कुछ लिये हमें सबकुछ देती है वैसे ही मैं अपने इस विश्वविद्यालय की बगिया को बेहतर बनाने के लिए हरसंभव कोशिश कर रही हूँ।

अपने स्वागत उद्बोधन में विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, कॉलेज डेवलपमेंट, प्रो पंकज कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय की पहली महिला कुलपति जिन्हें विश्वविद्यालय की 'आयरन लेडी' भी कहा जाता है उनका इस मौके पर स्वागत करते हुए हम सबको गर्व हो रहा है। प्रो कुमार ने कहा कि वर्तमान कुलपति ने अनगिनत कार्य किया है जिसने विश्वविद्यालय के गौरवशाली इतिहास को फिर से स्थापित किया है। उन्होंने कहा कि अपने अथक प्रयास से उन्होंने विश्वविद्यालय को नई दिशा और ऊँचाई दी है जिसमें - 700 शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों की नियुक्ति, अधोसंरचना विकास, प्रांगण में सकारात्मक माहौल का विकास, क्यूएस में विश्वविद्यालय की सुधरती रैंकिंग आदि शामिल हैं।

अलुम्नाई एसोसिएशन के अध्यक्ष, प्रो. हेराम्भ चतुर्वेदी ने कहा कि मैं आपका सिर्फ स्वागत नहीं बल्कि आपको नमन करने यहाँ आया हूँ। आपने अपने तीन साल के कार्यकाल में तिहरा शतक मारने जैसा कार्य किया है। आपने दुष्यंत की उस पंक्ति को चरितार्थ किया है जिसमें वे कहते हैं कि 'सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं, मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।' आज आपके कार्यों को देखकर मैं ये कह सकता हूँ कि आपकी शिष्टिसयत विजयनगरम् प्रांगण के इस टॉवर से भी ऊँची है और आपके हौसले आसमान से भी ऊँचे हैं।

संकायाध्यक्ष, अनुसंधान एवं विकास प्रो एस.आई. रिज़वी ने कहा कि हमने आपके जज़्बे और जीवटता को बहुत करीब से देखा है जब आपके कार्यकाल के शुरुआती दिनों में हम कोविड के दौर से गुजर रहे थे। हमने पिछले कुलपतियों को देखा है जो दूसरे विश्वविद्यालयों से आये थे। वे यहाँ आकर अपनी विश्वविद्यालय की ही बात करते थे। हमें प्रो संगीता श्रीवास्तव के रूप में एक ऐसी कुलपति मिली जो अपनी ही विश्वविद्यालय की बात करती हैं। आपके

कार्यकाल में सभी संकायों में जिस तरीके के परिवर्तन हुए हैं उन्हें देखकर लोग अचंभित हो जाते हैं। विश्वविद्यालय में अगर पिछले सौ सालों में किये गये नये कार्यों की बात करें तो आपने अब तक सभी कुलपतियों से इतर यह दिखाया है कि आपने अपने एक बार लिए गए निर्णयों को लागू किया है; ऐसा आज तक कभी नहीं हुआ। अभी तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय एक बनाना रिपब्लिक के तौर पर देखा जाता था। नए निर्णय ज़रूर लिए जाते थे परंतु उन्हें ज़मीन पर उतारना नामुमकिन हो जाता था। आपने अपने हौसले से विश्वविद्यालय की पूरी तस्वीर बदल दी और दिखाया कि हर तरह के दबाव के बावजूद विश्वविद्यालय के हित में किस तरह से निर्णय लिये जाते हैं और उन्हें किस प्रकार लागू किया जाता है।

प्राचीन इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. हर्ष कुमार ने कहा कि 'तमाम आन्दोलनों के बावजूद आपने ऑफलाइन परीक्षा करवाई, सौ साल से रुकी हुई फीस बढ़ाई, उपद्रव रोके इसके लिए मैं आपको बधाई देता हूँ।'

कार्यक्रम में डॉ. नरेंद्र कुमार ने 'जिंदगी हर कदम एक नयी जंग है', डॉ. मोना अग्निहोत्री ने 'वन वे टिकट टू एयू', डॉ. रेहना मोल ने 'बावरा मन देखने चला एक सपना' नामक गीत प्रस्तुत किया। संगीत विभाग के विद्यार्थियों ने डॉ. विशाल जैन के निर्देशन में तैयार 'महुआ झरे' गीत पर शानदार नृत्य प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ भारतीय परंपरानुसार स्वस्ति गायन व दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। स्वस्ति गायन डॉ. प्रतिभा आर्या ने किया। इस दौरान कुलपति प्रो. संगीता श्रीवास्तव के कार्यकाल और उपलब्धियों पर बनी फिल्म भी दिखाई गयी। अंत में गांधी अध्ययन पीठ के अध्यक्ष प्रो. संतोष भदौरिया ने अभिनंदन पत्र का वाचन किया। कार्यक्रम का संचालन विश्वविद्यालय की जनसंपर्क अधिकारी प्रो. जया कपूर एवं डॉ. सोनल शंकर ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव प्रो. एन के शुक्ला ने किया।

इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय परिवार की मुखिया के सफलतापूर्वक तीन वर्ष पूर्ण होने पर विभिन्न विभागों ने पुष्पगुच्छ देकर उनका अभिनंदन किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय परिवार के रजिस्ट्रार, संकायों के संकायाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष एवं अन्य आचार्य मौजूद रहे।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं कार्टूनिस्ट स्व. शिक्षार्थी स्मृति आयोजन (17 फरवरी 2024)

कार्टूनिस्ट की सृजनशीलता अद्भुत होती है। वह एकांत के क्षणों में आपका मनोरंजन करती है तो देश दुनिया के बारे में चल रही घटनाओं पर व्यंग्य के जरिए प्रकाश भी डालती है। मैं आज भी एकांत में टॉम एंड जेरी के कार्टून देखती हूँ और कार्टून ने तो बच्चों को कितना सिखाया है। पोपेई नाम के कार्टून ने बच्चों को पालक खाना सीखा दिया। ये बातें इलाहाबाद विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. संगीता श्रीवास्तव ने दृश्य कला विभाग में स्व. शिक्षार्थी स्मृति कार्टून चित्र की प्रदर्शनी में कहीं।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दृश्य कला विभाग एवं केंद्रीय सांस्कृतिक समिति के संयुक्त तत्वावधान में 17 फरवरी 2024 को साहित्यकार, कार्टूनिस्ट स्व. शिक्षार्थी जी की स्मृति में कार्यशाला, कार्टून चित्र प्रदर्शनी, पुस्तक विमोचन व सम्मान समारोह का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता कुलपति प्रो. संगीता श्रीवास्तव ने किया। कार्यक्रम में मुख्य

अतिथि प्रसिद्ध कार्टूनिस्ट पत्रकार ,पर्यावरणविद , नाटककार आबिद सुरती थे जिनके बनाए गए कार्टून और चरित्र भी प्रदर्शनी में शामिल थे। यह कार्टून दृश्यकला विभाग में आयोजित कार्यशाला के दौरान निर्मित हुआ था।

आबिद सुरती जी ने कार्यक्रम में बोलते हुए कहा कि मैं दृश्य कला विभाग की यह प्रदर्शनी देख कर अभिभूत हुआ मैंने बहुत से प्रदर्शनियों का उद्घाटन देखा है लेकिन यह अभूतपूर्व है। अध्यक्षीय भाषण में कुलपति प्रो. संगीता श्रीवास्तव ने व्यंग्य चित्रों की संदेश देने की ताकत के बारे में बात की और विद्यार्थियों को कहा कि इस सृजनशीलता से वह कुछ सीखें। उन्होंने धर्मयुग के दिनों को याद करते हुए कहा कि वह ढब्बू जी के कारण पत्रिका का पिछला पन्ना पहले पढ़ती थीं।

कार्यक्रम में स्व. शिक्षार्थी जी की कार्टून पुस्तिका का विमोचन भी हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए दृश्य कला विभाग और सांस्कृतिक समिति के अध्यक्ष प्रो. अजय जेटली ने कहा कि आज की प्रदर्शनी और कार्यक्रम देख कर उन्हें संतोष हो रहा है कि वह विभाग को जिस तरह सजाने का सपना देख रहे थे वह साकार होता लगा रहा है।

कार्यक्रम में कुलसचिव प्रो. एन.के. शुक्ला, प्रो. संजय सक्सेना, प्रो. जया कपूर चड्ढा, प्रो. बेचन शर्मा, प्रो. के. एन. उत्तम, प्रो. अनुपम पांडेय, प्रो. शबनम हमीद, प्रो. अनिता गोपेश के साथ शिक्षार्थी परिवार से भावना शिक्षार्थी, अनुभव शिक्षार्थी आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन अमितेश कुमार ने किया, स्वागत वक्तव्य मोना अग्निहोत्री ने दिया और धन्यवाद ज्ञापन किया विशाल जैन ने। केंद्रीय सांस्कृतिक समिति के सदस्यों अमित सिंह, विशाल विजय, अमृता, के साथ दृश्य कला विभाग के अध्यापक सचिन, शौमिक के साथ शोधार्थी और छात्र भी अच्छी संख्या में मौजूद थे।

18 फरवरी 2024 को दूसरे दिन 'पर्यावरण, साहित्य, कार्टून और रंग कर्म की दुनिया' विषय पर श्री आबिद सुरती जी का व्याख्यान होगा। वरिष्ठ साहित्यकार एवं समालोचक *प्रो.राजेंद्र कुमार* कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे। कार्टून प्रदर्शनी 17, 18 और 19 को विभाग में देखी जा सकती है।









कला गुरु क्षितीजनाथ मजूमदार की स्मृति में 'कला -समीक्षा' विषय पर व्याख्यान का आयोजन हुआ (22 february 2024)

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दृश्यकला विभाग एवं केंद्रीय सांस्कृतिक समिति के संयुक्त तत्वावधान में कला गुरु क्षितीजनाथ मजूमदार की स्मृति में 'कला -समीक्षा' विषय पर व्याख्यान का आयोजन हुआ। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कला और एस्थेटिक स्कूल के प्रो.वाई. एस. अलोनी ने कला आलोचना के विविध संदर्भों को विस्तार से व्याख्यायित किया। उन्होंने बताया कि कलाकार कलाकृति का सृजन तो कर सकता है लेकिन उसे दर्शक तक संप्रेषित करने के लिए कला-भाषा को कला समीक्षक ही गढ़ता है। कला समीक्षा में बड़ी चुनौती कला समीक्षक और क्यूरेटर की होती है। प्रोफेसर इस सलोनी ने 'कोची बिन्नाले' प्रदर्शनी पर की हुई समीक्षा के माध्यम से कला समीक्षा की बारीकियां को बताया। समकालीन कला में रस सूत्र से संबंधित करके कलाकृति को समझा जा सकता है। कला के पारलौकिक सौंदर्य पर भी कला समीक्षा का प्रभाव रहता है।

दृश्य कला विभाग के अध्यक्ष प्रो.अजय जैतली ने स्वागत वक्तव्य दिया। डॉ. विशाल जैन से कार्यक्रम का संचालन किया। धन्यवाद डॉ. पल्लवी पटेल ने दिया। इस अवसर पर डॉ. अमृताडॉ. सचिन सैनी, डॉ. संदीप मेघवाल, डॉ. शौमिक नंदी, बड़ी संख्या में शोधार्थी व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पुराछात्र एवं समीक्षावादी चित्रकला के प्रवर्तक , कलाभूषण प्रो.रामचंद्र शुक्ल

जन्मशती वर्ष का शुभारंभ (1 March 2024)

पुराछात्र एवं समीक्षावादी चित्रकला के प्रवर्तक कलाभूषण प्रो.रामचंद्र शुक्ल जन्मशती वर्ष का शुभारंभ हुआ। जन्मशती वर्ष की शुरुआत में संगोष्ठी, प्रदर्शनी एवं परिचर्चा की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई। प्रो.शुक्ल का जन्म जिला बस्ती के हरैया तहसील के छोटे गाँव शुक्लपुरा में एक मार्च 1925 को हुआ। प्रो.शुक्ल भारतीय चित्रकला के परिवेश में ऐसे चिंतनशील कलाकार के रूप में स्थापित रहे, जिन्होंने भारतीय कला परिदृश्य में न केवल अपनी बेबाक आलोचना के द्वारा सुविचारित दिशा प्रदान करने का काम किया। बल्कि विश्व की आधुनिक चित्रकला को पुनर्व्याख्यायित भी किया। कला को देशकाल की सीमाओं से परे रखकर उन्होंने बहुत मजबूती से उसका आंकलन किया। अपनी भाषा, कलादृष्टि तथा स्वयं की विकसित लेखन शैली द्वारा ऐसे मुहावरे कला जगत को दिए, जिससे कला की दुरुहता विद्यार्थी व कलाकारों तथा आमजन के लिए सहज एवं सरस हो गई। प्रो.शुक्ल का मानना था कि पाश्चात्य चित्रकला में समष्टिवादी संवेदना को ग्रहण करने की क्षमता नहीं है जबकि भारतीय चित्रकला मूलतः समष्टिवाद है। ये विचार इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दृश्यकला विभाग के अध्यक्ष प्रो.अजय जैतली ने व्यक्त किए।

वर्ष 1943 में प्रो. रामचंद्र शुक्ल ने कला की शिक्षा कलागुरु क्षितीन्द्र नाथ मजूमदार से प्राप्त की थी। कला क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण पुस्तकें उन्होंने लिखी हैं, जिनमें चित्रकला का रसास्वादन, कला दर्शन, नवीन भारतीय चित्रकला शिक्षण पद्धति, कला और आधुनिक प्रवृत्तियां, कला प्रसंग, आधुनिक कला समीक्षावाद, आधुनिक चित्रकला, पश्चिमी आधुनिक चित्रकला प्रमुख हैं।

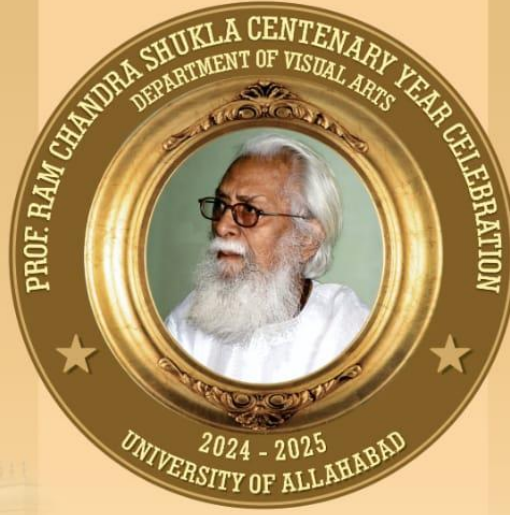
प्रो. शुक्ल की जन्मशताब्दी वर्ष के आयोजन वर्षभर चलेंगे। इस आयोजन की अध्यक्षता डीन कला संकाय इलाहाबाद विश्विद्यालय ने की। उन्होंने प्रो. शुक्ल की कला के माध्यम से कला की बारीकियों को रेखांकित किया। मुख्य अतिथि प्रो. उत्तमा दीक्षित ने अपने संबोधन में कहा कि प्रो. शुक्ल केवल इलाहाबाद के ही नहीं बल्कि वह बनारस के भी हैं। वर्ष पर चलने वाले कार्यक्रम में से कुछ कार्यक्रम बनारस में आयोजित करने की गुजारिश भी की। विशिष्ट अतिथि प्रो. शुक्ल के पुत्र प्रदीपचंद्र शुक्ल ने पिता के रूप में विभिन्न स्मृतियों को रेखांकित किया। उनके दूसरे पुत्र डॉ. आनंद शुक्ल ने पिता के साथ मां के संस्मरण को भी साझा किया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. निरंजन सिंह ने किया। धन्यवाद डॉ. ब्रजेश यादव ने किया। इस अवसर पर प्रो.

अनुपम पांडेय, पर डॉ. संदीप कुमार मेघवाल, डॉ. अदिति पटेल, डॉ. सचन सेनी, डॉ. अमृता गणमान्य जन, बड़ी संख्या में शोधार्थी व वदयार्थी उपस्थित रहे।



संरक्षक
प्रो. संगीता श्रीवास्तव
माननीया कुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय



दृश्यकला विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पुराछात्र एवं
समीक्षावादी चित्रकला के प्रवर्तक,
कलाभूषण प्रो० रामचन्द्र शुक्ल की जन्मशती वर्ष
के शुभारम्भ के अवसर पर आयोजित
संगोष्ठी, प्रदर्शनी एवं परिचर्चा
में आप सादर आमंत्रित हैं।

अध्यक्षता:

प्रो. संजय सक्सेना

डीन, कला संकाय,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

मुख्य अतिथि:

प्रो. उत्तमा दीक्षित

विभागाध्यक्ष एवं डीन, दृश्यकला संकाय
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

विशिष्ट अतिथि:

प्रो. प्रदीप चन्द्र शुक्ल

भूतपूर्व डीन एवं विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र संकाय
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

विशिष्ट अतिथि:

डॉ० आनन्द शुक्ल

वरिष्ठ नेत्र चिकित्सक एवं सर्जन, प्रयागराज।

दिनांक: 01 मार्च 2024 / समय : दोपहर 2 बजे

स्थान : के. एन. मजूमदार सभागार, दृश्यकला विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय









इलाहाबाद विश्वविद्यालय की केंद्रीय समिति द्वारा रंग संगम 2024 का आयोजन (20 March 2024)

होली मिलन का ऐसा चढ़ा रंग कि कुलपति ने भी गुनगुनाया गाना कि 'कैसे होली खेले जाऊं सांवरिया बदरिया घिर आई ननदी और उपस्थित श्रोता झूमने लगे।'

विगत वर्ष की तरह इस वर्ष भी इलाहाबाद विश्वविद्यालय की केंद्रीय सांस्कृतिक समिति होली के अवसर पर होली मिलन समारोह रंग संगम 2024 का आयोजन हुआ। यह आयोजन कला संकाय परिसर के निराला आर्ट विलेज में बने नवनिर्मित मुक्ताकाशी रंगमंच में बुधवार बीस मार्च की संध्या में संपन्न हुआ। आयोजन की शुरुआत में कुलपति प्रो. संगीता श्रीवास्तव ने दीप प्रज्ज्वलन किया। रंग संगम की औपचारिक शुरुआत हिंदी विभाग के अध्यापक लक्ष्मण

गुप्ता के गज़ल के वाचन से हुआ। उन्होंने सुनाया कि देखिए, अंबर ने कैसा फागुनी पैगाम भेजा, तितलियों से रंग लेकर जिंदगी के नाम भेजा विद्यार्थी कल्याण के अधिष्ठाता प्रो. हर्ष कुमार ने सदा आनंद रहे यह नगरी मोहन खेले होरी गाकर आयोजन पर होली का रंग चढ़ाया। इसमें प्रो. आशीष सक्सेना ने रंग बरसे भेजे चुनर वाली गाकर इस सिलसिले को बढ़ाया तथा डॉ. अमित सिंह ने केसरिया गाकर माहौल को खुशनुमा बनाया। संगीत और दृश्य कला विभाग के अध्यापक सुरेंद्र जी ने सुगम संगीत की प्रस्तुति की। उन्होंने 'अवध में बाजे ला बधईया हो रामा' के चैती गाने से शुरुआत किया। इसके बाद उन्होंने कन्हैया घर में चलो गुइया आज खेले होरी गाकर रंग जमाया। गायन का अंत उन्होंने परंपरागत जोगिरा गाकर किया।

कार्यक्रम का समापन विशाल जैन और छात्रों की टीम द्वारा नृत्य और संगीत से हुआ। कार्यक्रम में श्रोता देर तक आनंद में डूबते रहे। होली के अवसर को चुटीला बनाते हुए विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों को उपाधि से भी नवाजा गया। और उनके लिए एक गीत समर्पित किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. संगीता श्रीवास्तव और पुलिस कमिश्नर रमित शर्मा जी को भी उपाधि दी गई। कार्यक्रम के आखिर में कुलपति महोदया ने भी 'कैसे होली खेले जइयो सावन में सांवरिया बदरिया घिर आई ननदी गाया'।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में विश्वविद्यालय के अध्यापकों के साथ शहर के गणमान्य अतिथि और प्रशासन के पदाधिकारी मौजूद थे। विश्वविद्यालय ने एक परिवार की तरह इकट्ठा होकर होली का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मोना अग्निहोत्री और डॉ. अमृता ने किया।



